कीमतः 3.00 रुपये मात्र

मई–2002

विश्व स्नेह समाज

मासिक पत्रिका

0नैना का धारावाहिक उपन्यास "दिल का पैगाम"0 छुन्नन गुरु एक व्यक्तित्व

जलता गाँधी का गुजरात

अहिंसा के पुजारी के घर में ही हिंसा

अहिंसा एवं विश्व शांति के प्रथम उपदेष्टा

भगवान ऋषभदेव

कुंवर रघुराज प्रताप सिंह
(राजा भइया)
पूर्व मंत्री
खेल कूद, युवा कल्याण एवं
प्रान्तीय विकास दल।

कार्यालय : 238171
सी.एच. : 3591
आवास : 226239
227811

विधान भवन,
लखनऊ

प्रिय द्विवेदी जी, दिनांक : २४.०३.२००२

आप होली के शुभअवसर पर अपनी लोकप्रिय मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का होली विशेषांक प्रकाशित करने जा रहे है। यह जानकर अतिप्रसन्नता हुई। आपकी पत्रिका विश्व में अपने नाम के अनुसार स्नेह समाज स्थापित करने में सहयोगी बने ऐसी शुभकामनाएं प्रकट करते हुए पत्रिका की उत्तरोत्तर बृद्धि के लिए शुभाकांक्षी।

(कुंवर रघुराज प्रताप सिंह)

सेवा में,
श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रधान संम्पादक 'विश्व स्नेह समाज'
इलाहाबाद

सभी पाठकों को होली की बधाई ☎:461402

फैशन लेडीज टेलर्स

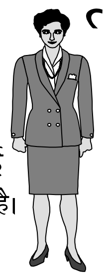

७३५/१, जायसवाल मार्केट, कटरा, इलाहाबाद
हमारे यहाँ सभी प्रकार के लेडिज सूट की सिलाई विशेष कारीगरों द्वारा उचित मूल्य पर की जाती है।
एक बार सेवा का मौका अवश्य दे।
एक बार आयेगे विज्ञापन पढ़कर,
बार-बार आयेगे काम देखकर। प्रो० राकेश गुप्ता

सभी पाठकों को होली की बधाई

रोगन चन्द्रमा

सरदर्द, समलबाई, चक्कर, दिमागी कमजोरी और आँखों की रोशनी के लिए लाभदायक टानिक।
नोट : सर माथे और कनपटी पर मालिश करें।
नि०: नन्हे पहलवान एण्ड संस आमा मसजिद, चौक, इलाहाबाद

सभी पाठकों होली की शुभकामनाएं

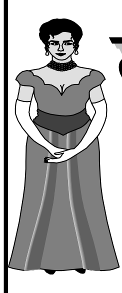

तान्या ज्वेलर्स

सोने एवं चांदी के आभूषणों के विक्रेता एवं निर्माता
प्रो० हीरालाल
सम्पर्क करें : २/२, लूकरगंज, जी.टी. रोड, हीरालाल मार्केट, इलाहाबाद

सभी पाठकों एवं बीड़ी पीने वाले को होली की बधाई
पीते ही लव हो जाय, सुस्ती को दूर भगाए

१२४ नम्बर बीड़ी

सदा प्रयोग करें।
निर्माता : एच.डी. ए.पी., सहसो, इलाहाबाद
वितरक : रामखेलावन एण्ड सन्स,
६६, कोठापार्चा, इलाहाबाद, फोन न० : ४०४१६५, मोबाइल न० ९८३६०५०८१३

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त रजि० : ८३२
सभी देश वासियों एवं पाठकों होली की शुभकामनाएं

स्नेहागन कला केन्द्र

(गोकुल पब्लिक फाउन्डेशन सोसायटी द्वारा संचालित)
बैच प्रारम्भ : ०सिलाई ०कढाई ०पेटिंग
० इंग्लिश स्पोकेन (फ्री कम्प्यूटर एजुकेशन के साथ)
सम्पर्क समय : प्रात : ६ से १२बजे तक सायं : ३ से ७ बजे तक
सम्पर्क स्थल: एम०टेक० कम्प्यूटर एजुकेशन, कौशाम्बी रोड, धुस्सा (ग्राम प्रधान की मकान)

होली की शुभकामनाओं सहित ☎:461402

UNITEC

Computer Education
Training - CIC, BCA, MCA, DCA, E.Com, Internet etc.
Job Work :Typing, Composing, Designing and lazer Printing & Cyber-Cafe
Add : Rajroopur, (Near Police Booth) Kalindipuram, Allahabad, e-mail: sppal2001@yahoo.co.in

मासिक पत्रिका

विश्व स्नेह समाज

वर्ष : १, अंक ७, अप्रैल २००२

संरक्षक : श्री बुद्धिसेन शर्मा ☎:657075

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक :
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादक : डॉ० कुसुम लता मिश्रा

सलाहकार संपादक :
नवलाख अहमद सिद्दीकी

साहित्य संपादक :
डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय

विज्ञापन व्यवस्थापक/प्रबंध संपादक
श्रीमती जया "गोकुल"

सहायक संपादक :
० रजनीश कुमार तिवारी ० सीमा मिश्रा

ब्युरो :
ज्ञानेन्द्र सिंह (मिर्जापुर)
सोशन एलिजाबेथ एवं हरि प्रताप सिंह,इला०
पृथ्वी राज सिंह (सामा० व्यूरो, इला०)
रमेश त्रिपाठी (कौशाम्बी)
श्रीमती पुष्पा शर्मा (पटना)
गिरिराजजी दूबे (गोरखपुर)
सूर्यकांत त्रिपाठी (फतेहपुर)
मो० तारिक ज्या (जौनपुर)
मिस संहमित्रा भोई (उड़ीसा)
मिस लक्ष्मी हजोअरी (आसाम)

कम्पोजिंग एवं डिजाईनिंग :
एफ०सी०एल०सी०,नितीन काम्पलेक्स, मेवा लाल की बगिया रोड, नैनी, इला०-८

सम्पादकीय कार्यालय :
२७७/४८६,जेल रोड, चकरघुनाथ,
नैनी, इलाहाबाद, फोन ☎ ४३२९५३

कार्यालय :
एम.टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
कौशाम्बी रोड, धुस्सा, इलाहाबाद

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

स्वत्वाधिकारी, सपांदक, प्रकाशक व मुद्रक **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** द्वारा **भार्गव प्रेस**, बाई का बाग, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर २७७/४८६, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

प्रिय पाठक बन्धु

नमस्कार

पत्रिका परिवार की ओर से आप सबको होली की शुभकामनाएं। आशा है कि आपकी पत्रिका आपको समय पर मिल रही होगी। आप हमेंशा की भॉति अपने विचार हमें निरतंर देते रहेगे। आपकी प्रतिक्रियायें सकारात्मक रहीं। इसके लिए धन्यबाद।

किसी एक प्रयत्न से कोई निश्चित सफलता मिल ही जाये यह आवश्यक नहीं। किसी भी सफलता के लिए चाहे वह राजनैतिक हो, शैक्षिक अथवा सामाजिक हो। सफलता के लिए प्रयत्नों की परम्परा लगा देनी चाहिए। परिश्रम एवं पुरुषार्थ के रुप में उसका मूल्य चुका ही देना होता है। जितना उसके लिए अनिवार्य है। किसी व्यक्ति को अपने किसी भी कार्य के लिए असफल मान लेना स्वयं अपने साथ अन्याय करना है। संसार में 'लिंकन' जैसे हजारों व्यक्ति हुए है जिन्होनें अपने उद्देश्य में सैकड़ों बार असफल होकर भी अन्त में अभीष्ट सफलता का वरण कर ही लिया है।

किन्तु इसके लिए मन शरीर से अधिक शक्तिशाली साधन है। इसके पुष्ट एवं निर्द्वन्द होने पर हम आश्चर्यजनक रुप से उन्नति कर सकते है; किन्तु खेद है कि हमारी मनोभूमि बुरी तरह विकारग्रस्त बनी हुई है। कारण चिंता, निराशा, क्षोभ, लोभ और सबसे जटिल राजनीतिक भूंकम्प हरबार उसे द्विगभ्रमित अस्त-व्यस्त बना देता हैं। जिससे स्थिरता सदाशयता, प्रसन्नता का कोई लक्षण नहीं गोचर होता।

हमें सजग नेता, सजग समाज का प्रहरी,होना है और ऐसे ही व्यक्ति का चयनम हमें करना चाहिएं। प्रलोभनों से बचके सत्य को सम्मुख करके उसे ही विजयी बनाये। उहपोह की स्थिति को त्यागें। भिंगमंगों की टोली को नष्ट कर दें।

तुलसीदास ने लिखा है-

बरसत हरजत लोग सब करसत लखे न कोय
तुलसी प्रजासुभाग ते राम सरिस नृप होय।

आपकी
डा० कुसुमलता मिश्रा 'सरल'

बेबाक

→सरकार अयोध्या पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले स े पूर्व अविवादित भूमि पर किसी गतिविधि या पूजा की इजाजत नहीं देगी।

अटल बिहारी बाजपेयी
प्रधानमंत्री, भारतसरकार

→केन्द्र सरकार को विश्व हिन्दू परिषद को किसी किस्म की रियायत नहीं देनी चाहिए।

सोनिया गॉधी
नेता विपक्ष एवं अध्यक्ष, कांग्रेस

→रामलला को चढ़ावे में शिलाओं का दान करेंगे। इसके लिए उन्हें खुद रामलला ने स्वप्न में आकर आदेश दिया है।

महंत रामचन्द्र परमहंस
अध्यक्ष, रामजन्मभूति न्यास व मंदिर निर्माण समिति

→राजा राम मोहन राय और केशव चंन्द्र सेन संस्कृत के घोर विरोधी थे। ये लोग अंग्रेजों की पालकी के सामने लेटकर कहते थे कि संस्कृत हटाओं।

डॉ० मूरली मनोहर जोशी
केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री

→हम जानवरों की तरह बर्ताव क्यों करते है? हममें क्या है, जो हमसे पत्थर फिंकवाता है या रेलगाड़ी की एक बोगी में बैठे बच्चों और औरतों को जलवाता है?

शबाना आज़मी
प्रसिद्ध अभिनेत्री एवं सासंद

→विहिप और राम जन्म भूमि न्यास इस बात पर सहमत हो गए है कि वह अदालता का फैसला आने तक विवादित जगह पर कोई छेड़छाड़ नहीं करेगे। वहीं, मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड इस पर बात राजी हो गया है कि न्यास की अधिग्रहित अविवादित जमीन उसे लौटा दी जाए। अविवादित जमीन पर पूजन और निर्माण कार्य में उसें कोई आपत्ति नहीं है।

स्वामी जयेन्द्र सरस्वती
कॉची कामकोटि के शंकराचार्य

→गुजरात की हिंसा, राष्ट्र की छबि पर ऐसा बदनुमा दाग है जिसने सभी को कटघरे में खड़ा कर दिया है।

अटल बिहारी बाजपेयी
प्रधानमंत्री भारतसरकार

खुला मंच

गोंधरा कांड में पाकिस्तानी हाथ

इस समय जाति-सम्प्रदाय के नाम पर जो रक्तपात हो रहा है और इससे सैकड़ें निर्दोषों की जाने गई, वह पाकिस्तानी चाल लगती है। जहॉ यह दगे भड़के है, हमें नही भूलना चाहिए कि वह प्रदेश पाकिस्तान से सटा हुआ है। हमारी सरकार इतनी भोली है कि अगर कोई देश उसे बार-बार चुनौती देता है, तब भी वह चुपचाप आंखे बंद किए बैठी है। हमारा पड़ोसी देश जो कि हर महीने किसी न किसी रुप में कोई घटना करवाता है, परंतु हमारी सरकार समझ नहीं पाती। अभी इस समय घटित ताजा घटना को ले लीजिए कि साबरमती एक्सप्रेस के गोधरा स्टेशन से कुछ दूर चलने पर डेढ़ दो हजार लोगों के झुंड ने ५८ लोगों को जला डाला। इसके जवाब में दगे भड़कने शुरु हो गए, जिसमें सैकड़ें लोगो की जाने गई। इससे आपको नही लगता कि यह पाकिस्तान की साजिश है। उसने सोचा कि वैसे तो भारत का सामना कर नहीं पाएंगे, तो सांप्रदायिक दगे करवांए जाए। इतने वर्षो से परस्पर मिल जुलकर रहने वाले हिन्दू-मुस्लिम को अलग करने में सफल भी हो जाए।

आर०पी० वर्मा, पटना

जलता गाँधी का गुजरात

☞ नौलाखा सिद्दीकी

अहिंसा के पुजारी के घर में ही हिंसा

गुजरात में तबाही और मौत के ताण्डव को देख-सुनकर हमारे देश के बहुत से लोग जो ईमानदारी से लोकतांत्रिक मूल्यों और धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखते है, स्तब्ध हैं। इस बात को लेकर भी हैरानी है कि एक ऐसा प्रांत जहां शराबबंदी है और लोगों का खानपान आमतौर पर शाकाहारी है अर्थात् वैष्णव जन ऐसा कैसे कर सकते है? सच तो यह है कि गुजरात में जिस बर्बर हिंसा का चक्र चल रहा ह

आवरण चित्र डालना है।

गुजरात में एक दशक में हुई, साम्प्रदायिक हिंसा की एक झलक

६ दिसम्बर १९९२ : भाजपा, विहिप और आरएसएस ने कारसेवा का निश्चय किया। अयोध्या में जुटे करीब तीन लाख कारसेवकों ने विवादित ढॉचे को ध्वस्त किया। साम्प्रदायिक दंगों में करीब एक हजार लोग मारे गये। इस दौरान गुजरात में सबसे ज्यादा लोगों की मोत हुई।

१६ दिसम्बर १९९२: इस दिन अहमदाबाद में साम्प्रादियक दंगे हुए, जिसमें दस लोग मारे गये।

११ जनवरी, १९९३ : मुम्बई में भड़का दंगा गुजरात के अहमदाबात सहित कई शहरों में फैला।

२५ दिसम्बर, १९९८, ३ जनवरी १९९९ : समूचे गुजरात, विशेषकर डांग जिले में पूर्वनियोजित योजना के तहत ईसाईयों और उनसें सम्बद्ध संस्थाओं पर हमले किये गये।

२२ जनवरी १९९९ : ईसाइयो के खिलाफ किये गये हमलों में उनकी संपत्ति को खास तौर पर निशाना बनाया गया। सूरत में दो स्थानों पर प्रार्थना हॉल को आग लगा दी गयी।

२० जूलाई १९९९ : गुजरात में दरियापुर क्षेत्र में दंगा भड़का, जिसने करीब के कालूपुर, सरसपुर और शाहपुर को अपनी चपेट में ले लिया। इसमें १८ लोग मारे गये। अहमदाबाद के एक होटल को आग लगाने के प्रयास में बजरंग दल के दो कार्यकर्ता जल मरे।

६ मार्च २००१ : दिल्ली में कुरआन के कुछ पन्नों को कथित रुप से जलाये जाने की अफवाह के बाद गुजरात के कुछ क्षेत्रों में साम्प्रदायिक दंगे हुए जिसमें दो लोग मारे गये और २० घायल हुए।

२७ फरवरी २००२ : गुजरात के पंचमहल जिले में गोधरा रेलवे स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस के कुछ डिब्बों पर भीड़ ने हमला कर आग लगायी। इसमें करीब ६० यात्री जिन्दा जल गये थे। इसके बाद लगभग समूचे गुजरात में साम्प्रदायिक दंगे हुए। अनुमान है कि इन दंगों में १००० से ज्यादा लोग मारे गये और हजारों लोग बुरी तरह घायल हो गये। गुजरात के कई शहरों में सेना ने फ्लैग मार्च किया।

श्रद्धांजलि

वास्तविक जन नेता थे प्रथम दलित लोकसभा अध्यक्ष

● **गिरिराजजी दूबे**

गंती मोहनचन्द्र बालयोगी (जी.एम.सी. बालयोगी) अपनी पढ़ाई विशाखापत्रनम् स्थित आंध्र विश्वविद्यालय से की। पढ़ाई पूरी करने के बाद वे वकालत के क्षेत्र में आ गए। बाद में उनका चयन प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट के रुप में हुआ, लेकिन उन्होनें इस्तीफा दे दिया और काकीनाडा में प्रेक्टिस करते रहे। १६८३ में एन.टी.रामाराव द्वारा गठित तेलगुदेशम पार्टी से राजनीति में कदम रक्खा।

सबसे पहले अपने जिले पूर्वी गोदावरी के जिला परिषद अध्यक्ष बने। १६६८ में वह पहली बार लोकसभा में पहुँचे। १६६६ से १६६८ तक आंध्रप्रदेश सरकार में शिक्षा मंत्री के रुप में भी अपनी छाप छोड़ी।

१६६८ में १२वीं लोकसभा के लिए चुने जाने पर ४७ वर्ष की उम्र में उन्होनें लोकसभा के सबसे कम उम्र के अध्यक्ष बनने का गौरव पाया। १६६६ में वह फिर लोकसभा अध्यक्ष की कुरसी पर बैठे। बहुत से लोगों को बालयोगी की योग्यता पर संदेह था, लेकिन उनके काम ने सबको खामोश कर दिया। नियमों का पालन कराने में भी सख्ती दिखायी।

सदन का कामकाज अच्छी तरह चलाने के लिए बालयोगी ने हिंदी सीखने में भी देर नहीं लगाई। बाद में से सदन का अधिकतर कामकाज हिंदी से ही चलाने लगे थे।

दुर्घटना के समय बालयोगी अपने गृह राज्य के दौरे पर थे। उनके दौरे के अंतिम क्षणेंा में तमाम परिवर्तन हुए और अंततः ३ मार्च २००२ तेरहवीं लोकसभा का तीसरा काला रविवार साबित हुआ। इससे पहले १२ जून २००१ दिन रविवार को कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य राजेश पायलट की जयपुर के पास एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। दूसरे लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता माधवराव सिंधियां की पिछले साल ३० सितम्बर, २००१ दिन रविवार को उ०प्र० के कानपुर के पास एक विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई। और तीसरे बालयोगी जी थे।

भारत की अस्मिता

कौशल कुमार "सुर्या"

आज के परिप्रेक्ष्य में भारत अपनी अस्मिता खोता जा रहा है। क्या इसका कारण राजनेता है या फिर हमारा आज से ५० वर्ष पूर्व बना संविधान। प्राचीन समय में भारत पूरे विश्व पर एक छत्र राज्य किया करता था तथा सभी देशों को निर्देशित करता रहा और आज वहीं भारत क्या अमेरिका, पाकिस्तान की घुड़की भी सहता है, क्या भारत का गौरव इसी प्रकार इसी तरह घटता हुआ चला जाएगा। यह वही भारत है जहॉ पर सबसे पहले शून्य का आविष्कार हुआ। दशमलव प्रणाली तथा सूर्य के चक्कर (पाइथागोरस के अनुसार) लगाने के सटीक समय एवं पाई की सहीं टेकनामेंट्री तथा चतुष्कोणिय समीकरणों का प्रयोग सर्वप्रथम यही हुआ।

आज शिक्षा के क्षेत्र में भारत का नाम भले ही दस की गिनती में न हो परन्तु विश्व का पहला विश्वविद्यालय खोलने वाला देश भारत ही है, जिसने तक्षशिला में नांलदा विश्व विद्यालय खोला था। यहीं नहीं ब्रिटिश आक्रमण से पूर्व भारत सोने की चिड़िया कहलाता था क्योंकि विश्व में एक मात्र हीरे की खान का स्वामी भारत ही था। आयुवेर्दिक चिकित्सा का प्रारम्भ भारत में ही हुआ या शल्य चिकित्सा के जनक सुश्रुत भारत के ही थे। भारत ही सबसे पहले हड़प्पा संस्कृति का विकास किया था जबकि उस समय सभी संस्कृतियॉ जंगली संस्कृतियॉ थी। समुन्द्र यात्रा सर्वप्रथम भारत से ही शुरु की गई थी।

भारत ने हॉकी तथा शंतरंज जैसे महत्वपूर्ण खेलों की शुरुआत की, आज के समय में विश्व के अनेक देशों में जितनी भी प्रतिभाओं की द्वार नई-नई चीजों की खोज हो रही है।, उन सबकों भारत आज से हजारों वर्ष पूर्व खोज कर चुका था वहीं भारत आज अपने सबसे बड़े रोग को अपनी शक्ति से न मिटाकर अपने कोतवाल अमेरिका से रिपोर्ट लिखाता है और अपने सब्र की दुहाई देता है जो आज के समय में बेकार है। क्या भारत ने पूरे विश्व की शान्ति का ठेका ले रखा है जो शान्ति-शान्ति चिल्लाता है और अपनी रक्षा के लिए विश्व समुदाय से डरे बिना अपनी रक्षा स्व्यं नहीं कर सकता, उसी जगह अमेरिका और इस्राायल अपनी रक्षा के लिए विश्वसमुदाय से डरे बिना तोपें दाग रहे है और भारत केवल हाथ ही मलता रहा। क्य भारत के पास वास्तव में शक्ति नही है कि हमारे राजनेताओं में शक्ति नहीं है। यदि राजनेताओं मे इतनी कमी है तो उतर जाये अपनी कुर्सी से, उतार दें कुर्ते पायजामें और गेरुआं वस्त्र धारण कर चले जाए जंगल में, देश को साम्प्रादियकता के आग में झोककर सब धर्मो को जलाकर अपनी राजनीति की रोटी सेकने वाले नेताओं को स्वर्ग की तो छोड़िये नरक के दरवाजे भी उनके लिए बंद रहेगे। अभी हाल ही में गोधरा जैसे काण्ड ने तो दिल को दहला दिया पर नेताओं के तो पसीना तक नहीं आया क्योंकि वे तो सिर्फ राजनीति करते है। कभी मन्दिर तो कभी मस्जिद के नाम पर लड़ाने वाले कभी देश की भलाई नहीं कर सकते, हिन्दओं को हिन्दओं का अधिकार तथा मुसलमानों को मुसलमानों का अधिकार न दिखाकर वह दोनों सम्प्रदायों को आपस में लड़वाते हैं। मन्दिर, मस्जिद के मुद्दे से झगड़ने से क्या फायदा यह तो सभी को मालूम है कि पहले कौरन सा धर्म था। और पहले क्या बना था। अब तो महज राजनीति हो रही है।

अभी कुछ समय पहले हमारे शिव सेना प्रमुख नेता श्री ठाकरे जी ने वैलेनटाइन डे पर रोक लगाने का असफल प्रयास किया। इसकी स्थिति किसने की। हमने आपने। हमारे नवयुवक साथी भी लग रहा इस समय सो रहे है वे केवल चौदह फरवरी को ही जागते है। मेरे नवयुवकों अभी भी वक्त है जाग जाओं और अपने भारत को कृष्ण जैसा सारथी बनाओं जिसके पास इतनी शक्ति हो कि वह महाभारत रुपी पूरे विश्व की कमान अपने हाथ में लिए रहे।

क्या यह वही भारत है जिसमें कभी फाहयान जैसे चीनी यात्री बेखौफ घूमते थे न चोरी का डर न तो अपनी जान का। आज भारत अपने संसद, विधानसभा तथा उसके सदस्यों की रक्षा करने में असमर्थ दिखता है। क्या हमारे नीति में कोई कमी रह गई है कि हमारे देश के लिए लोकतंत्र असफल है।

हमारे भारत की आन, बान, शान कहॉ चली गई। जिसकी गाथा पूरे विश्व में सुनी जाती थी और गर्व से कहते थे हम भाारतीय है। आप अपने को भारतीय कहने में शर्म महसूस करते है। हमें एक संकल्प करना है और भारत पुनः सोने की चिड़िया कहलाए, चारों तरफ भारत ही दिखाई दे और भारत अपनी खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त कर सके और हम सभी के सिर हिमालय की भॉति सर उठा कर, गर्व से जिए।

दाउजी की डायरी

मैं भारत हुं

- ☠ मैं राह चलते किसी को भी लूट सकता हूॅं।
- ☠ किसी की जान मार सकता हुं। हाथ/पैर तोड़ सकता हुं
- ☠ किसी के भी साथ रेप कर सकता हुं
- ☠ राह चलते ट्रेन में, बस में जीप में आग लगा सकता हुं।
- ☠ किसी भी सार्वजनिक स्थान पर बम फेंक सकता हूॅं। मेरा पुलिस, कानून जनता कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है क्योंकि बड़े-बड़े नेता मेरे आका है।

कार्टून : दाउजी

अहिंसा एवं विश्व शांति के प्रथम उपदेष्टा

भगवान ऋषभदेव

युग के प्रारम्भ मं जबकि मानव भोग प्रधान जीवन जी रहा थ और उसकी सारी आवश्यकताएं कल्पवृक्षों अर्थात् इच्छित फल प्रदान करने वाले वृक्षों के द्वारा सहज में ही पूरी हो जाती थी, तब मानव को किसी भी प्रकार के संघर्ष, वैमनस्य इत्यादि का सामना नहीं करन पड़ता था, सब ओर स्वयं ही शांति का सुख का वातावरण था। पर धीरे-धीरे काल के प्रभाव से कल्पवृक्षों की शक्कित घटने लगी और जनसमुदाय को जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में कइिनाई होने लगी। ऐसे संक्रामक काल में एक महान पुरुष का धरती पर अवतरण हुआ, जिनका नाम था "भगवान ऋषभदेव"। भारत भूमि की अयोध्या नगरी में पिता नाभिराय एवं माता मरुदेवी से जन्में ऋषभदेव ही मानवीय संस्कृति के आद्य प्रणेता के रुप में प्रतिष्ठित हुए और उन्हें ही युगादि पुरुष, आदिब्रहमा, आदिसृष्टा आदि नामों से जाना गया, वैदिक ग्रंथो ने उन्हें अष्टम अवतार मान तो मुस्लिम समुदाय ने आदम-बाबा कहकर पुकारा।

ऋषभदेव ने यशस्वती एवं सुनन्दा नामक दो कन्याओं से विवाह करके धरती पर विवाह परम्परा का दिग्दर्शन कराया एवं प्रथम राजा के रुप में उन्होंने धर्मनीतिपूरक राज्य का संचालन कर बावन देशें। में अलग-अलग राजाओं को विभक्त करके उन्हें कुशल राजनीति का उपदेश दिया।

सृष्टि की व्यवस्थाओं को प्राथमिक रुप बतलाने के कारण उन्हें आदिब्रहमा, आदिनाथ, पुरुदेव, वृषभदेव, प्रजापति आदि नामों से भी जाना जाता है। संसार परंपरा की व्यवस्थानुसार उनकी दोनों रानियों से भरत-बाहुबली आदि एक सौ एक पुत्र एवं ब्राहमी-सुंदरी नामक् दो पुत्रियों ने जन्म लिया। इनमें से प्रथम पुत्र भरत जो चक्रवर्ती सम्राट बने और और उनके नाम पर ही इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

श्री जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण ग्रन्थ के अनुसार तिरासी लाख पूर्व वर्षो तक राजा ऋषभदेव ने राजसुख का उपभोग किया। पुनः एक दिन वे राजसिंहासन पर आसीन थे और उस राजसभा में नीलाजंना नाम देवअप्सरा, नृत्य करते-करते मृत्यु को प्राप्त हो गई। पुनः वहां उसी समय दूसरी अप्सारा उपस्थित होकर नृत्य करने लगी। इस रहस्य को कोई सभासद तो जान नहीं सके किन्तु दिव्य अवधि ज्ञानी राजा ऋषभदेव संसार की क्षणभंगुरता ज्ञातकर वैराग्यभाव को प्राप्त हो गये और उन्होनें चैत्र कृष्णा नवमी को प्रयाग के सिद्धार्थ वन में जाकर वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली। एक वर्ष उनतालिस दिन के उपवास के पश्चात वैशाख शुक्ला तृतिया के दिन उनका प्रथम आहार हस्तिनापुर में राजा श्रेयांस के महल में हुआ था तभी से वह दिवस अक्षय तृतिया पर्व के रुप में मनााया जाता है।

दीक्षा के पश्चात् भगवान ऋषभदेव ने एक हजार वर्ष तप करके 'पुरिमतालपुर' नगर के उद्यान में फाल्गुन कृष्णा एकादशी के दिन केवलज्ञान को प्राप्त कर पृथ्वी से बीस हजार हाथ ऊपर अधर आकाश में पहुंच गये, जहां धनकुबेर ने समवरण की रचना कर दी और उस नगर के राजा वृषभदेव ने भगवान के पहुंचकर दीक्षा ग्रहण कर प्रथम गणधर का पद प्राप्त कर लिया। ऋषभदेव ने समवसरण में असंख्य भव्य प्राणियों को उपदेश प्रदान कर नब्बे हजार वर्ष पूर्व वर्ष का काल व्यतीत कर माघ कृष्णा चतुदर्शी के दिन कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त कर लिया। उसके पश्चात् इस धरती पर भगवान अजितनाथ से लेकर महावीर तक तेईस तीर्थकरों ने जन्म लेकर इस

तीर्थकर परम्परा का प्रद्योतन किया अर्थात जैनधर्म के चौबीस तीर्थकरों में से प्रथम तीर्थकर भगवान् ऋषभदेव हुए एवं अंतिम तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी हुए, जिनके वर्तमान शासन में हम सभी जीवनयापन कर रहे है।

महापुरुषों के सिद्धात सदैव प्रासंगिक होते हैं यहां तक एक तथ्य विशेष रुप में विचारणीय है कि भोगभूमि कें अंत में प्रजा की कठिनाइयों को जानकर महाराज ऋषभदेव ने जीवन जीने की कला को सीखाने के लिए षट् क्रियाओं का उपदेश दिया। वे षट् क्रियाएं थी-असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य, और शिल्प। 'असि' अर्थात अपने रक्षण के लिए युद्ध किया; 'मसि' अर्थात लेखन क्रिया; कृषि अर्थात अपने पुरुषार्थ द्वारा फल, सब्जी, मेवा इत्यादि उत्पन्न करना; विद्या विभिन्न प्रकार की कलाओं-विद्याओं का उपार्जन; वाणिज्य-आर्थिक व्यापार तथा शिल्प गृह निर्माण आदि क्रियाएं।

भगवान ऋषभदेव ने बहुत ही दूरदर्शितापूर्वक इन छह क्रियाओं का प्रतिपादन किया था, जिसमें एक दूसरे के प्रति परिपूर्ण अहिंसक वृत्ति रखते हुए सदाचरण रुप व्यवहार करना ही मूल अधार था। ऐसे आदिपुरुष द्वारा उपदेशित क्रियाओं को मूल मर्म संसार को बहुत ही सम्यक् प्रकार से समझना होगा। 'असि क्रिया में भगवान ने युद्ध का निर्देश तो किया है पर यह युद्ध है अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए, न कि बलपूर्वक दूसरे के अधिकार क्षेत्र को छीनने के लिए। इसी प्रकार कृषि क्रिया में अपने शारीरिक श्रम द्वारा शाकाहार रुप अनाज, फल, सब्जी, मेवा एवं अन्य भोज्य पदार्थो को उत्पन्न करके भगवान ने सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा जीविकोपार्जन की बात कही थी।

दीक्षा भूमि जाने का मार्ग

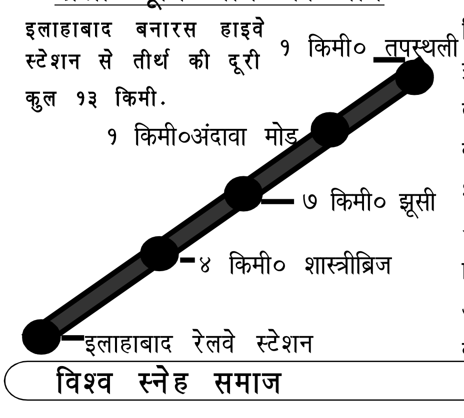

जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर
भगवान ऋषभदेव की दीक्षाभूमि-प्रयाग में एक मूर्ति रुप

जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव ने युग की आदि में जिस पावन भूमि पर जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण करके तपस्या की थी, उसी भूमि को जैन पुराणों ें प्रयाग तीर्थ कहा गया है। जो कि वर्तमान में इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग के नाम से दिगम्बर जैन तीर्थ का निर्माण किया जा रहा है। तीर्थ निर्माण के लिए दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-जम्बूद्वीप हस्तिनापुर के अंतर्गत इलाहाबाद-बनारस हाईवे, मेन रोड पर एक भूमि क्रय की गई है। जहॉ पर दुतगति से निर्माण कार्य चल रहा है।

भगवान ऋषभदेव ने प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे दीक्षा ग्रहण की थी। अतः भगवान ऋषभदेव तपोवन को निर्माण किया जा रहा है एवं भगवान के केवलज्ञान कल्याणक के रुप में समवसरण का निर्माण किया जा रहा है। इसके साथ ही एक विशाल कैलाश पर्वत ७२ जिनालयों से युक्त निर्मित हो रहा है, तथा उसी कैलाश पर्वत के ऊपर भगवान ऋषभदेव की १४ फूट पद्मासन विशाल प्रतिमा विराजमान हो रही है।

मंदिर तक पहुॅचने मार्ग व सुविधाएं

तीर्थकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ पर पहुॅचने के लिए रेल अथवा बस से आने वाले यात्री इलाहाबाद उतरें।

इलाहाबाद रेलवे स्टेशन, इलाहाबाद बस स्टैन्ड अथवा शहर से तीर्थकर ऋषभदेव तपस्थली जैन तीर्थ लगभग १३ किलोमीटर दूर बनारस हाइवे मेन रोड पर अन्दावा के निकट है। टेम्पों एवं बसें शहर से हर समय मिलती हैं। तीर्थ के निकट आमने सामने २ पेट्रोल पम्प हैं तथा तीर्थ के मुख्य द्वार पर बड़ा साइन बोर्ड लगा हुआ है।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माता जी

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी का जन्म २२ अक्टूबर सन् १९३४ आश्विन शुक्ला (शरदपूर्णिमा) पूर्णिमा को हुआ। बचपन में ही धर्मग्रन्थों के स्वाध्यायादि के कारण एवं पूर्वजन्म के पुण्यसंस्कारवश मन में संसार से वैराग्य के अंकुर उत्पन्न हो गये और सन् १९५२ में १८ वर्ष की युवावस्था में शरदपूर्णिमा के ही दिन सप्तमप्रतिमारुप आजन्म ब्रहमचर्यव्रत ग्रहण कर लिया पुनः सन् १९५३ में क्षुल्लिका दीक्षा तथा सन् १९५६ में वैशाख कृष्णा दूज के दिन परमपूज्य चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर महाराज से आर्यिका दीक्षा ध ाारण कर जैन समाज ही प्रथम बालब्रहमचारिणी आर्यिका एवं गणिनी प्रमुख जैसे सर्वोच्च पद को सुशोभित किया है।

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़ और मराठी आदि भाषाओं में सरल साहित्य रचना आपके जीवन का प्रमुख अंग रहा है। इसीलिए २५० ग्रन्थों की लेखिका बनकर आज सर्वोच्च लेखिका के रुप में मान्य है।

याददाश्त तेज करने के कारगर उपाय

किसी से हुई मुलाकात, कुछ पढ़ा हुआ, कोई घटना या व्यक्ति का नाम काफी समय बीत जाने के बाद भी याद रखना आपकी स्मरण शक्ति का तेज होना बतलाता है। मस्तिष्क की यह क्षमता या शक्ति हर मानवीय क्रियाकलाप से लेकर बड़े से बड़ा वैज्ञानिक अभियान इसी शक्ति यानी स्मृति के आधार पर आगे बढ़ाता है।

मानवीय विकास और उत्थान में स्मृति का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा पठन-पाठन, अध ययन, नृत्य संगीत और समस्त कलाएं स्मृति के आधारित है। एक राग प्रारम्भ करने के बाद उसके स्वर भूल जाने पर सोचिए एक गायक की क्या दशा होगी? नृत्य के समय ताल की गणना भुला बैठने पर नृत्यांगना के पैर कहां पड़ेगे? कैसे पड़ेगे? स्मृति मंद हो जाय तो पढ़ना-लिखना सब व्यर्थ हो जाएगा यह तो सभी जानते है और बार-बार भूल जाने पर बेचारी गृहस्वामिनी की गृहस्थी में तो भूचाल आ जाएगा।

हमारी याददाश्त एक बालक की तरह चंचल होती है। हर मनपंसद चीज स्मृति की धरोहर बन जाती है। स्मृति को प्रायः एक चीज से घृणा होती है और वह है रटन्त विद्या। परीक्षा पास करने के लिए आज के माहौल में रटन्त विद्या की बहुत आवश्यकता है और जो विद्यार्थी इस विद्या को हासिल नहीं कर पाते यानी जिसकी स्मृति कमजोर होती है सफलता की दौड़ में पीछे रह जाता है वह चाहे कितने ही मौलिक विचारों और ज्ञान का धनी क्यों न हो।

प्रत्येक याद रखने वाली चीज को किसी आकर्षक वस्तु से जोड़िए तथा उसको एकदम छोटे-छोटे हिस्सों में तोड़ लीजिए। तब वह बात आपको हमेशा याद रहेगी।

अमूमन व्यक्ति दो चीजें अधिक भूलता है नाम भूल जाना एक बड़ी आम समस्या है और इसकी वजह से कभी-कभी बड़ी लज्जा या संकोच का सामना करना पड़ता है।

किसी अपरिचित से मिलते समय गौर से उसका नाम सुनिये और बातचीत के अगले किसी वाक्य में इस नाम को दोहराइये। नाम के साथ उस व्यक्ति के चेहरे की कोई खास बात अवश्य जोड़ लें जैसे अपरिचित युवती का नाम उमा हो और उसके ऊपरी होंठ पर एक तिल हो तो ऐसे याद रखें-होंठ पर तिल वाली उमा। बातचीत के दौरान भी कई बार उमाजी या उमा नाम को दोहराइये।

सख्या का स्मरण करना भी महत्वपूर्ण है। लेकिन एक बार में ७ से अधिक अंक याद रखना काफी कठिन काम है। लेकिन यदि आपकों अधिक याद रखने की आवश्यकता आ ही जाए तो इसके लिए विशेषज्ञों ने सूत्र विधि सुझायी है। एक से लेकर दस तक के प्रत्येक अंक को किसी एक चीज से जोड़ डालिए। अंको को चित्रमयता उन्हें याद रखने में सहायक होगी। जैसे-अंग्रेजी के वन से लेकर टेन अंकों को ऐसे जोड़े वन (रन), टू (थ्रू), तीन (ट्री), फोर (डोर), फाइव (जाइव), सिक्स (स्टिक्स), सेवन (हेवन), ऐट (गेट), नाइन (साइन), टेन (फेन)।

सभी के अंकों को ऐसे चित्रमय बनाये एक-चन्द्र, दो-पक्ष, तीन-नेत्र, चार-वेद, पांच- बाण, छह-ऋषि, सात-समुन्द्र, आठ-अष्टवमु (तारे), नौ-ग्रह, दस-दिशाएं। इन पारम्परिक अंकों ढंग से आपको अंक उनकी चित्रमयता के कारण अवश्य याद रहेंगे। किसी कहानी या रचना के एक हिस्से को पढ़कर याद रखना हो तो उसे निम्न तरीके से कई भागों में बांट लें-

- सभी समानताओं के जोड़े बना लें
- बेतुकी चीजों पर गौर करें।
- क्रियाओं पर ध्यान दें।
- उस रचना में वर्णित ध्वनि, तथा दृश्य को ध्यान में रखे।

इन मोटी-मोटी बातों पर ध्यान देने से पूरी रचना, रचनांश या छोटी कहानी को याद रखना आसान हो जाएगा। पढ़ते समय इन चीजों के चित्र दिमाग में बनते जाएंगे और इनसे उस चीज को याद रखाना रुचिकर या आसान लगेगा।

यदि किसी गंभीर विषय को स्थायी रुप से याद रखना चाहती हों तो पुनरावृत्ति का सिद्धात आजमांए। बार-बार और एक निश्चत अंतराल पर उसी चीज को दोहराएं तो यह चीज दिमाग में घुसकर बैठ हो जाएगी। प्रसिद्ध मेमोरी एक्सपर्ट टोनी वर्जन के अनुसार कम से कम पांच बार एक ही विषय को नीचे दिये अंतर पर पढ़े।

- दस मिनट बाद
- एक दिन बाद
- एक हफ्ते बाद
- एक माह बाद
- चार माह बाद

इतने अभ्यास से कठिन से कठिन मैटर भी याद हो जाएगा।

विशेषज्ञ कहते है कि किसी चीज को याद करते समय कितनी बार आप रुकेगी और पुनः शुरु करेंगी उतना ही अच्छा होगा।

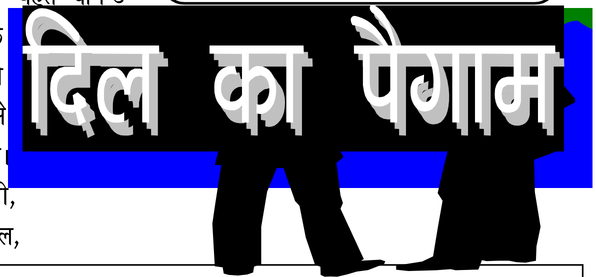

दिल का पैगाम

अनिल और सावन दोनों ही बहुत घनिष्ठ मित्र हैं। वे दोनों एक दूसरे के लिए जान देने को तैयार रहते हैं। दोनों एक ही संस्था से कम्प्यूटर-डिप्लोमा कर रहे थे। इसी दौरान अनिल की दोस्ती, अपने ही बैच की सुन्दर, सरल, मृदुभाषी पढने में होशियार दिखने में अच्छी लडकी, मिस अनुराधा से हो जाती है जो धीरे-धीरे प्रेमिका का रूप धारण कर लेती है। इन दोनों की दोस्ती का माध्यम सावन था। उनकी प्रत्येक समस्याओं का समाधान प्रत्येक मर्ज की दवा सावन ही था। अनुराधा और अनिल की दोस्ती ने सावन और अनिल के याराने में चार-चॉद लगा दिया। सावन की अनुपस्थिति में वे दोनों पंगु से हो जाते।

- अनिल और अनुराधा का प्यार आसमान की ऊँचाईयों को चूमने लगा, पर जमाने को खबर न थी।
- अनिल की दीवानी अनुराधा के प्यार को न केवल सरेआम कर दिया, बल्कि वसूलों के पक्के सावन और शालू भी इसकी ऑच में तपने लगे।
- और इधर अनिल की मॉ भी सावन को अगले जन्म में अपने कोख से पैदा करने की तमन्ना पाल ली।

इसी उपन्यास से आगे जानने के लिए पढ़ते रहिए-.................. ‘

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ”नैना”

एम.ए., एम०सी०ए०,

प्रकाशित रचनाएं- हिन्दी दैनिक “आज”, न्यायधीश, प्रयागराज टाईम्स, अमर उजाला, मासिक पत्रिका “ विश्व एकता संदेश, गुड़िया, लोकध्वनि, कम्पटीशन रिफ्रेसर, विज्ञान प्रगति। आकाशवाड़ी के युवा मंच से जुड़ाव

सम्पर्क सूत्रः फ्यूचर कम्प्यूटर लर्निग सेन्टर, २७७/४८६, जेल रोड, चक रघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद

धीरे-धीरे दिन बीतते गये और उनका प्यार परवान चढने लगा किन्तु सावन की बारीकी से किसी को भी इसकी खबर तक न लग पायी। लेकिन कहते हैं कि-चार दिन की चॉदनी, फिर अंधेरी रात। फाइनल सेमेस्टर की परिक्षाओं की तारीख निश्चित हो गयी। अब मामला यह फॅसा कि कैसे वे दोनों मिलेंगें? सावन की राय के अनुसार परीक्षा के अन्तिम दिन इन लोगों की मुलाकात होगी, उसके पहले कोई एप्वायमेंट नहीं। मगर यह मुलाकात भी खुदा को मंजूर न थी। परिक्षा के अन्तिम दिन अनुराधा का कज़िन परीक्षा छूटते ही अनु को लेने आ गया, और सावन यहॉ अपनी बुद्धि का प्रयोग न कर सका। आश्चर्य तो इस बात का था कि तीन साल की लम्बी दोस्ती के बावजूद अनिल न तो अनु का घर जानता था और न ही पता। उन्होंने केवल एक-दूसरे को जाना था।

फाइनल सेमेस्टर के बाद होने वाली बी०ए० तृतीय वर्ष की, परीक्षा की तैयारी में सावन और अनिल जुट गये। इसबीच अनिल खूब तडपता रहा, लेकिन कोई रास्ता नजर नहीं आया। अनिल तो बस सावन के भरोसे था, पर सावन के कठोर सिद्धान्तों के आगे मजबूर था। सावन व्यवहार कुशल, सामाजिक होने के बावजूद परीक्षा के समय के बीस दिन पहले से कोई अन्य कार्य, एप्वायमेंट स्वीकार नहीं करता था। वह कहता था कि-‘‘ नो फ्रेन्डशिप, नो रिलेशनशिप! वनली स्टडी एण्ड इंटरटेंटमेंट ड्यूरिंग द एक्जामिनेशन।‘‘ परीक्षा के बाद सावन एक महीने तक खूब जमकर घूमता और मौजमस्ती करता।

- - - - - - - - - - - - - - -

- - - - - - - - - - - - - -- -

परीक्षा के बाद- ‘‘सावन यार, मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूॅ, क्य न करूॅ? उधर परीक्षा थी तब मुझे, खासकर तुम्हारे सिद्धान्तों से डर था कि कहीं तुम खफा न हो जाओ? क्योंकि मैने पिछले वर्ष तुम्हें जीजाजी को भी, परीक्षा समय में आने के कारण, कोई खास लिफ्ट देते हुए नहीं देखा था। पर अब तो कुछ करो।‘‘

‘‘ठीक है यार अनिल, देखो कोई न कोई उपाय निकालता हूँ।‘‘

सावन इस समय अनिल की बातों को सामान्य रूप में ही लेता है और मौजमस्ती में मशगूलइ रहता है। किन्तु कुछ ही दिनों उपरान्त अनिल की गम्भीर हालत को देखकर उसके बारे में सोचने को मजबूर हो जाता है। सर्वप्रथम उसने अनु की सहेलियों के बारे में सोचा, जिसमें उसके जेहन में अनु की बेस्ट-फ्रेन्ड ‘‘शालू‘‘ रूपी विकल्प अधिक कारगर लगा। सावन को यह पूर्ण रूप से विश्वास था कि शालू से उसकी समस्या का समाधान कुछ न कुछ अवश्य निकलेगा। उसने शालू का पता अपनी पडोसन श्रीमती सुशील से पता किया। क्योंकि वहॉ उसने शालू को आते-जाते देखा था। सावन शालू से मिलने निकल पडता है और सौभाग्य से उसे रास्ते में ही शालू दिख जाती है।

सावनः-शालू के नजदीक आकर- एक्सक्यूज मी, शायद आप मुझे पहचानती होंगीं। कम्प्यूटर ...(इसके पहले कि शालू कुछ बोले सावन ने पुनः कहा) दरअसल शालिनी जी, मैं आपके ही घर को जा रहा था। शायद वहॉ पहुॅचने के लिये और पहुॅचने के बाद काफी मसक्कत का सामना करना पडता। खुदा का शुक्र कि आप रास्ते में ही मिल गयीं, वरना.....। अब आप यह पूछेंगी कि भला मुझसे कौन सा काम आ पडा जो. ...?

शालूः- मानी हुई बात है।

सावनः- मैं ज्यादा समय ज्या नहीं करना चाहता, अतः मैं अपने मकसद पर आता हूॅ। मैं जिस मकसद के लिये आपके पास आया हूॅ, वह आपके लिये जितना आसान है, उतना ही मेरे लिये कठिन है।

शालूः- अरे, मकसद तो बताइये?

सावनः- आप तो अनुराधा से भली-भॉति वाकिफ होंगी, जो अपने ही बैच ‘‘बी‘‘ की छात्रा और आपकी सहेलियों में से एक थीं।

शालूः- इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं है।

सावनः- लेकिन शालू जी, शायद आपको यह नहीं मालूम कि अनु और अनिल एक-दूसरे को प्यार करते हैं। कृपया इस बात को आप अपने तक ही सीमित रखियेगा। लेकिन अफसोस तो इस बात का है कि इतने दिनों की जान-पहचान और साथ पढने के बावजूद वे एक-दूसरे के घर का पता नहीं जान सके। और ना ही कभी जानने की कोशिश की।शायद उनके जेहन में इसकी जरूरत ही महसूस नहीं हुई। पर आज अनिल को अनु के पते की सख्त जरूरत है। अन्यथा मेरा प्यारा दोस्त अनिल, दिल का मरीज बनकर कहीं का नहीं रहेगा।

शालूः- आज तक अनु ने मुझे इस बारे में कुछ भी नहीं बताया।

सावनः- दरअसल, यह मेरा ही मोटो था कि हम तीनों के अलावा किसी अन्य को इसकी भनक भी नहीं लगे। और यह मोटो अन्ततः सीमित भी रहता, मगर मुझे आपको इस बारे में बताने में कोई भी खतरा महसूस नहीं हो रहा है।

शालूः-(थोडा सा मजा लेते हुये) आप कैसे इतने अडिग विश्वास के साथ कह रहे हैं?

सावनः- यह मेरा दिल कह रहा है और मेरा दिल जो भी कहता है वह ६६ प्रतिशत सत्य होता है। आपसे मेरी पर्सनल गुजारिश, रिक्वेस्ट है कि कृपया मुझे अनु का पता दे दें।

शालूः- (चिढाते हुये) मैं क्या करूँगी अनु का पता?

शालूः- आज तक अनु ने मुझे इस बारे में कुछ भी नहीं बताया।

सावनः- दरअसल, यह मेरा ही मोटो था कि हम तीनों के अलावा किसी अन्य को इसकी भनक भी नहीं लगे। और यह मोटो अन्ततः सीमित भी रहता, मगर मुझे आपको इस बारे में बताने में कोई भी खतरा महसूस नहीं हो रहा है।

शालूः-(थोडा सा मजा लेते हुये) आप कैसे इतने अडिग विश्वास के साथ कह रहे हैं?

सावनः- यह मेरा दिल कह रहा है और मेरा दिल जो भी कहता है वह ६६ प्रतिशत सत्य होता है। आपसे मेरी पर्सनल गुजारिश, रिक्वेस्ट है कि कृपया मुझे अनु का पता दे दें।

शालूः- (चिढाते हुये) मैं क्या करूँगी अनु का पता?सावनः- देखिये शालिनी जी,आप यह मत भूलिये कि हम सडक के किनारे खडे हैं, युवा हैं और दूसरी बात यह है कि किसी के जज्बात की बात है तथा जज्बात में मजाक अच्छा नहीं कहा जा सकता और खासकर आप जैसी बुद्धिमान, सभ्य और अच्छे घराने की लडकियों के लिये। अब आप यह भी प्रश्न पूछेंगी कि आपको क्या पडी है? तो यह जान लीजिये कि अनिल मेरा घनिष्ठ मित्र है और अनु मेरी धर्म बहन। और उन दोनों का मुझ पर उतना ही विश्वास है जितना कि मॉ को बेटे पर, बहन को भाई पर, और हारने पर भगवान में होता है। चूँकि मेरा दोस्त इस समय नाजुक दौर से सफर कर रहा है। इसलिये मुझे अनु के पते की जरूरत है।

शालूः- कहीं इसका दुरूपयोग तो नहीं करेंगें।(शरारत पूर्ण एवं रहस्यमयी शब्दों में)।

सावनः- इसके लिये मैं आपको क्या विश्वास दिलाऊँ? आप जो भी कहें मैं विश्वास दिलाने के लिये तैयार हूँ।

शालूः-(मजा लेते हुये) ज्यादा नहीं, बस मेरी ही सौगन्ध ले लीजिये।

सावनः- आश्चर्य के लहजे में-आपकी!

शालूः- हॉ, मेरी।

सावनः- वैसे तो शालू जी मैं सौगन्ध खाता नहीं और अगर खाता भी हूँ तो स्वयं की। खैर, आपकी सौगन्ध खाकर कहता हूँ.....

शालूः- (बात को बीच में काटते हुये, जैसे उसे सावन द्वारा अपनी सौगन्ध खाने का विश्वास ही न हो) अरे.....!

(सावन के होंठों पर हाथ रखकर उसकी जुबा को बन्द कर देती है।) बस-बस, मैं तो यूँ ही मजाक कर रही थी। मुझे आप पर शक करने की कोई बात ही नहीं बनती। अनु जीके पुरम् की आवास विकास कॉलोनी के मकान नं० एच०आई०जी०- १३-बी/६ में रहती है। उसके पिताजी का नाम श्री एस० एन० सिंह है और वो एक इंजीनियर हैं।

सावनः- शालू जी मैं आपका शुक्रिया कैसे अदा करूँ इसके लिये मेरे दिमाग की डिक्शनरी में शब्द ही नहीं मिल रहे हैं। मैं आपका जीवन भर एहसानमंद रहूँगा। कभी वक्त आये तो पुकार लीजियेगा। मैं हमेशा तैयार रहूँगा और पूरा प्रयास करूँगा।

शालूः ‘वाह! काम किसी और का, और एहसानमंद आप।

आप वास्तव में इसान हो (वह सावन को एकटक देखे जा रही थी, मानों एक प्रेमिका अपने प्रेमी को मुद्दत बाद देखी हो) मैं भी आप जैसे लड़के से ही प्यार करुँगी और शादी भी। जो बिल्कुल आपके स्वभाव का हो। हमशक्ल हो। वरना जीवन भर कुऑरी रहूगी,। (शालू धीरे से बोलती है)

सावनः शायद आपने कुछ कहा शालू जी।

शालूः (बात को छुपाने के लिए) नहीं तो?

सावन : अच्छा शालू जी, बहुत-बहुत शुक्रिया। (सावन से शालू से विदा लेकर सीधे अनिल के कमरे पर पहूचता है। अनिल अपने कमरे पर लेटा हुआ कुछ सोच रहा है।)

सावनः सॉरी यार, आई एम वेरी-वेरी सॉरी। (अनिल का खिल हुआ चेहरा मुरझा जाता है)

सावन : बस गये बच्चू काम से। पहले एक फिल्म का वादा करो, जानते हो कौन सी फिल्म ‘इश्क का बुखार‘।

अनिल : तुम्हारी प्रत्येक शर्त मंजूर है।

सावन : अनु का पता मिल गया है।

अनिल :सच

दोनों खूब ठहाका लगाकर हंसते हैं

अनिल की मम्मी - आज क्या बात है। बेटा तेरे आते ही अनिल हॅसने लगा। आज महीनों बाद उसके मुॅह से हंसी सून रही हूँ।

सावनः ऑटी, आखिर जहॉ सावन न हो, वहॉ हरियॉली कहा से आये। अब सावन आ गया है। तो अनिल सब कुछ करेगा।

अनिल की मम्मी रसोई में जलने की दुर्गन्ध ा सुनकर दौड़ी चली जाती है।

अनिल : सावन यार, तुम मेरे लिए दोस्त हीं नहीं बल्कि देवता हो। दिल में भी तुम्हारे बाद ही अनु का स्थान है।

सावन : ऐ-ऐ घोचूं। मुझे देवता मत कह, वरना भगवान भी मुझे गाली देगा और कहेगा। साला, चला है हमारा स्थान लेने और मुझे तुंरत एस.टी.डी यानि यमराज को भेजकर बुलवा लेगा।

अनिलः देखो यार ऐसी बात जुबान से फिर कभी मत निकालना, तुम्हें मेरी भी उमर लग

जाय।
सावन : फिर वहीं बात।
अनिल की मम्मी दोनों को बैठाकर अपने हाथों से खाना खिलाती है। और कहती है-"तुम दोनों मेरे जुड़वा बेटे हो। एक को मैनें नौ महीने पेट में पाला औरा बड़ा किया। मगर दूसरे बेटे को किसी देवी ने जन्म दिया, पाला पोसा और अब मेरे पास है। सावन, तेरे जैसा बेटा पाकर मैं धन्य हो गई हूँ। भगवान से मै यही प्रार्थना करुँगीं कि अगले जन्म में तुझे मेरी ही कोख से पैदा करे। तू युग-युग जिये मेरे लाल।
भोजन के बाद सावन और अनिल बैठकर जीकेपुरम जाने के बारें मे डिसकस करने लगे।
सावन : देखो अनिल, पहले वहाँ चलते है। मैं वहाँ उसके किसी पड़ोसी के लड़के को पआउँगा या फिर कोई अन्रू उपाय निकालूँगा। लेकिन एक समस्या है, वहाँ रुकने की।
अनिल : क्या करोगे, रुककर?
सावन : जानते हो। हो सकता है कि पलहे दिन उसके गार्जीयन घर पर हों या किसी अन्रू कारणवश हम लोग न मिल सके, तो दूसरे दिन सुबह या शाम करके मिल लिया जायेगा। बाकी मैं एडजस्ट कर लूगा। अगर वहाँ कोई परिचय का नहीं होगा तो होटल लेना पड़ेगा।
अनिल : अरे यार, मेरे ताउ जी की लड़की वहीं सरकारी अस्पताल में डॉक्टर है और वहीं गर्वनमेंट क्वार्टर में रहती भी है। वे वैसे भी हमें कई बार बुला चुकी है। वहीं ठहरा जाएगा और गाड़ी भी मिल जाएगी।
सावन : ठीक है मैं चलता हूँ, कल तो कुछ तो कुछ काम है। परसों सुबह ६ बजे चलेगे। **क्रमश : ....**

१.क्या अनिल, अनू से मिल पाता है?

२.क्या सावन, अनू के घर पता लगा पाता है?

३.क्या अनिल और अनू के प्यार के बारें में सावन के अलावा किसी और को पता लग पाता है।

४. क्या अनिल, और अनु का प्यार उनके घर वालों को मंजूर होता है?

जानने के लिए पढ़िए युवा उपन्यासकार **गोकुलश्वेर कुमार द्विवेदी "नैना"** का *दिल का पैगाम*

हिन्दी से अपना देश बढेगा आगे

हिन्दी है सौ करोड़ कंठों की भाषा,
हिन्दी जन-गण-मन की पावन अभिलाषा,
है अजर-अमर पीढी-दर-पीढी,
हिन्दी है उन्नति और प्रगति की सीढी।
यह भारत-माता की ऑखों का पानी,
यह देवनागरी जन-जन की कल्याणी,
यह मानवता के हृदय-सिंधु की मुक्ता,
यह सारी भाषाओं की है संयुक्ता।
हिन्दी की ज्योति हृदय में अपने जागे,
हिन्दी से अपना देश बढेगा आगे,
यह प्रगति-पंथ पर बढता हुआ चरण है,
यह सभी समस्याओं का निराकरण है।
यह दिव्य वनस्पतियों की है गुणवत्ता,
सागर पर जलयानों की विजय-महत्ता,
अत्याचारी के लिये काल की भाषा,
नन्हें-मुन्नों के मुख का दूध-बताशा।
है सरस्वती की वीणा इसमें गुंजित,
यह पांचजन्य के पुण्य घोष से पूजित,
शिव का पावन डमरू-निषाद है हिन्दी,
देवों का शुभ आर्शीवाद है हिन्दी।
हिमगिरि की धवल श्रृंखला जैसी उज्जवल,
गंगा-यमुना की लहरों जैसी निर्मल,
चारों धामों की यात्रा का संबल है,
यह मानवता का महाकुंभ का जल है।
हिन्दी का चंदन-तिलक लगाने वालों,
अपनी पूजा को थोड़ा और संभालो,
यह विश्व-प्रेम के शिखरों को छू लेगी ,
हिन्दी तो अपने-आप फले-फूलेगी।

बुद्धिसेन शर्मा
संपर्क- १४/१० केरलाबाग़
लेबर कॉलोनी, इलाहाबाद
दूरभाष-(०५३२)६५७०७५

आवश्यक सूचना

दोस्तो बधाई हो। इस कालम के अन्दर आप अपने इष्टमित्रो,रिश्तेदारों,सहयोगियो इत्यादि के जन्मदिन/शादी/शादी वर्षगांठ/होली/परीक्षा पास करने पर/नौकरी प्राप्त करने पर/ प्रमोशन इत्यादि पर बधाई संदेश भेजना चाहते है तो आपको अपना संदेश, संदेश प्राप्त करने वाले व्यक्ति का पता व २५.०० रुपये मात्र देना होगा। अगर आप फोटो भी छपवाना चाहते है तो आपको ५०.००रुपये व फोटो देना होगा। आपका संदेश पत्रिका में छपेगा और पत्रिका परिवार उस अंक को आपके द्वारा दिये गये पते पर डाक से भेजने की व्यवस्था करेगा।

आवश्यक सूचना–

प्रिय पाठकों, आपकी पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** में "स्नेहिल जायका" नामक नया स्थायी स्तंभ की शुरूआत करने जा रहे हैं। जो कि उन महिलाओं के लिए खास होगा जो तरह–तरह की रेसिपी बनाने में निपुण है। इसके लिए आप पाठक गण अपनी–अपनी रेसिपी लिखकर भेज सकते हैं। जिसे हम अपनी पत्रिका में छापकर प्रदेश के अलग–अलग कोने तक पहुँचायेंगे और अधिक से अधिक लोग आपकी रेसिपी को पढकर उसका लाभ उठा सकेंगे।

मैंने तुम्हें खरीदा

श्रीमती जया "गोकुल"

आइए, आइए भाई साहब, बैठिए आराम से। "सरोज के पिता ने विभव के पिता श्री रामचन्द्र अग्रवाल जी को साफे की ओर संकेत करते हुए कहा।

अग्रवाल जी सोफे पर बैठते हैं। सरोज के पिता श्री दीनानाथ भी सामने दूसरे सोफे पर बैठ जाते है। दोनों के बीच सामान्य शिष्टाचार की बातें होती है और फिर अपने आने का कारण स्पष्ट करते हुए अग्रवाल जी कहते है- भाई दीनानाथ जी, मुझे आपके द्वारा भेजी गयी लड़की की फोटो मिल गयी और घर में सभी को पसंद आ गयी है। अब आगे के बारे में भी बातचीत कर लें तो अच्छा रहेगा। क्योंकि शादी का मामला है जो बहुत ही संवदनशील और नाजुक मसला है तथा ये भविष्य के लिए परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ा होता है। इसीलिए मैं आपसे बातचीत करना चाहता हूँ।

दीनानाथ जी-हॉं, हॉं क्यों नहीं?

अग्रवाल जी -वैसे तो मैं प्रगतिशील और उन्नत विचारों वाला व्यक्ति हूँ और समय के साथ चलने की सोचता हूँ। मेरा मानना है कि जो समय के साथ नहीं चलता वो दुनिया की दौड़ में पीछे रह जाता है।

दीनानाथ जी : आपके विचार सराहनीय है। मेरी किस्मत कितनी अच्छी है जो आप जैसे विचारों वाले व्यक्ति से मैं रिश्ता करने जा रहा हूँ। आप ही जैसा उचित समझिए शादी की तारिख पक्की कर दीजिए।

अग्रवाल जी : वो सब तो ठीक है। लेकिन मैं जानना चाहता हुँ कि आप तिलक में कितना देंगें? क्योंकि हमारे खानदान में अभी तक अच्छी शादियॉं हुई हैं। और सभी में लाख के ऊपर मिला है। इसलिए मुझे भी समाज का ध्यान तो रखना ही पड़ेगा। और इससे आप की भी प्रतिष्ठा बढ़ जाएगी।

दीनानाथ जीः देखिए अग्रवाल जी, मुझे भी शौक है कि मैं अपनी लड़कियों को अधिक से अधिक दूँ लेकिन अगर एक लड़की होती तो मैं जरुर कर देता, पर सरोज से छोटी बहनों का क्या होगा? इतना मैं नहीं दे पाउगॉं।

अग्रवाल जी : देखिए दीनानाथ जी, आप समझते होंगे कि विभव इंजीनियर है और उसकी पढ़ाई पर मैंने कितना खर्च किया है। सिर्फ यही सोचकर कि आगे मुझे मिल जाएगा और फिर आपकी लड़की विभव के साथ रहेगी तो उसी को सुख मिलेगा, मुझे नहीं। वैसे जल्दी सोचकर बताइएगा क्योंकि अभी एक जगह और बात चल रही है और वो करीब दो लाख तक खर्च करेंगें।

अग्रवाल जी विदा लेकर चले जाते हैं और दीनानाथ जी इतना दहेज नहीं दे सकते थे जिससे शादी टूट जाती है। विभव की शादी नीरा नामक लड़की से होती है जिसके पिता जज हैं। शादी धूमधाम से होती हैं। कुछ दिनों के बाद जब विभव वापस शहर लौटने की तैयारी करता है तो नीरा आकर उससे जिद्‌द करती है कि वो भी चलेगी, लेकिन विभव मना कर देता है।

विभव : अभी तुम यहीं रहो। मैं तुम्हें रोज खत लिखूँगा और हफ्तें में एक बार जरुर आउगा। बस तुम उदास मत होना।

नीरा : नहीं। मैं आपके साथ ही चलुँगी। आखिर फिर आपने मुझसे शादी ही क्यों की।

अग्रवाल जी दोनों की बात सुन लेते हैं

अग्रवाल जी : देखो नीरा, तुम चली जाओगी तो यहॉं हम सब की देखभाल कौन करेगा?

नीना : नहीं पापाजी। मैं तो विभव के ही साथ जाउॅंगी।

अग्रवाल जी : (गुस्से से) : मुझे तुम्हारा इस तरह जवाब देना बिल्कुल भी नहीं पसंद। क्या समझती हो? (विभव की ओर देखकर) तुम भी इसे नहीं रोक रहे। क्या इसके हाथें बिक गये हो?

नीरा : हॉं, पापजी। इन्हें मैंने खरीदा है। पूरे

दो लाख में। और आपने ही इन्हें बेंच दिया है। मेरे लिए। क्योंकि आपकी नजर में इनकी कीमत दो लाख थी। सो मेरे पाप ने उस कीमत को चुका कर विभव को मेरे नाम कर दिया है। इसलिए विभव वहीं करेंगे जो मैं चाहुँगी। और आपका हमारे बीच में बोलने का अधिकार खत्म हो चुका है। क्योंकि आपने इन्हें पैदा करने का मूल्य वसूल लिया है।।

ग़ज़ल

मौसल अली

कितनी कड़वी थी शराब
ये बाद पीने के पता चला
सदा सहती रही बोतल
उस क्या है गुजरी
ये किस दिल को पता है
बस एक नजर देखा था उन्हें
मुहब्बत के पे क्या है गुजरी
ये किस दिल को पता है
उन्हें जाना था मुझे छोड़कर चले गये
वो किसी और के हो गये
गोचा तन्हाइय 'मोहसिन' में क्या है
गुजारी ये किस दिल को पता हैं

लघु कथा

आश्रय

नम्रता यादव 'स्वरांजली'

मैं बैठी यही सोच रही थी-ईश्वर तूने क्या तकदीर बनाई है न रहने को घर दिया न खुशियों का संसार, दिया तो सिर्फ ये जीवन जो अब बोझ बनता जा रहा है, अपने मॉ बाप के लिए मुसीबत, लोगों की खा जाने वाली दृष्टि को झेलती मेरी ये आत्मा हरपल एक मौत करती है, न खाने को भरपेट भोजन, न तन को कपड़ा, न रहने की जगह ये तीन आत्मायें जिनकों इस विशाल धरा में कहीं भी आश्रय नहीं उस पर मेरी युवावस्था तो मां बाप पर और ही कहर ढ़ा रही है। मेरे मां-बाप कि निगांहो में एक उथल-पुथल सा स्वप्न है कि बेटी का विवाह हो जाये तो जीवन को तिलांजलि दे दें। कहीं कुछ हो गया तो गरीब इज्जत है, क्या जाने कब इस फटे टाट पर कोई बदनामी का पैबन्द लग जाये, हमारे घर की अस्मिता छिन जाये। हे ईश्वर हम पर रहम कर, बाप ने कहा; मॉ से -मैंने एक लड़का देखा है इसकी शादी के लिए। देखने में अच्छा है, अच्छी कमाई कर लेता है, दूसरी शादी है उमर यही कोई ३५-४० वर्ष होगी।

मां ने कहा - बेटी के लिए दामाद देखकर आये हो या दूसरा बाप। मां रो पड़ी।

बाप ने कहा-ईश्वर की जैसी मर्जी, वहां बेटी खुश रहेगी कम से कम भरपेट खाना तो मिलेगा, रहने को सिर छुपाने को घर तो मिलेगा, इज्जत तो बची रहेगी और क्या चाहिए इस गरीब की बेटी को।

मैं चुप चाप उनकी व्यथा को सुनकर होठ सिये हुए उनके देखे कहे के अनुसार चली जा रही थी, एक परछाई के पीछे/यही सोचती हुई कि मां बाप ने तिलाजंलि दे दी है, मेरा विवाह करके अपने कर्तव्य का निर्वाह करके। पर मेरे अरमानों मेरी इच्छाओं मेरे सपनों, मेरे अस्तित्व का मोल, क्या ये परछाई, जिसके आश्रय की मुझे मेरे मां-बाप को तलाश थी दे पायेगी?

पति एंक दयनीय और पालतू प्राणी होता है

✍ राही अलबेला

जैसे ही पति शब्द का जिक्र कहीं पर होता है, बेचारा शब्द अपने आप जूड़ जाता है। पति और बेचारा, इन दोनों शब्दों का चोली दामन का साथ है। पति का जिक्र आये और बेचारा शब्द प्रयोग न हो ऐसा हो ही नहीं सकता।

पतियों और पत्नियों को लेकर कितने चुटकुले भी बन गए हैं। जब पति की जेब खाली हो और पत्नी की फरमाईश खत्म न हो तो-

पत्नी ने बताया -डॉक्टर साहब, मेरे पति बीच-बीच में बहरे हो जाते है। डॉक्टर बोला -गलती आपकी है, आप उनसे नयी सारी और गहनों की फरमाइश क्यों करती है?

कभी -कभी बेचारे पति सुबह से लेकर रात तक केवल सूनते रहते हैं। सूनते-सूनते कान पक जाते हैं, बेचारे अनसुना न करें तो क्या करे।

पत्नी-अजी, एक बात बताओं, आज सुबह से ही तुम्हें जली-कटी सुना रही हूँ पर तुमने चूं तक नहीं की। तबीयत तो ठीक है न?

मजबूरी का नाम महात्मा गांधी। बेचारा चुप न रहे तो क्या करें। औरतों को पूरे जीवन में तीन तरह की बिमारिया होती है। दो शादी की पहले एक शादी के बाद। शादी के बाद औरते अक्सर शिकायतें करती है -डार्लिंग अज मेरी कमर दर्द कर रही है, थोड़ा पानी भर दो ना। ये काम कर दो, वो काम कर दो। यह हफ्ते में चार दिन होता है।

प्रेमिका (अपने प्रेमी से)-लड़कियों को कौन-कौन से दर्द सहने पड़ते है, डार्लिगं

प्रेमी (प्रेमिका से)-दर्दे जिगर, दर्दे नजर, शादी के पहले और दर्दे कमर शादी के बाद।

औरतों के मुँह को खुलवाना और बंद करवाना बहुत ही टेढ़ी खीर है। छोटी सी बात को पहाड़ बनाकर खड़ा कर देती है। बेचारे पति महोदय को आज नहीं तो कल तो माननी ही पड़ेगी। बेटा, मानोगें नहीं तो जाओगे कहॉं। चाहे बात ससुर, सॉस, ननद या देवर के खिलाफ हो या पड़ोसियों के। और क्या हो ही सकती है। इन्हीं से इनकी जन्मजात दुश्मनी रहती है। और कभी जिसके ऊपर मेहरबान हो जायेगी तो बस सात खून मुआफ है। तब उनका मुह खुलवाना डॉक्टर के सिवा किसी के बस की बात नहीं।

दॉतो के डॉक्टर ही एक अकेला व्यक्ति होता है, जो अपनी इच्छानुसार औरतों के मुह खुलवा और बंद करवा सकता है।

जब शादी के लिए लड़की देखने जाये तो लड़की वाले उनकी इतनी तारिफ के पूल बॉधते है मानों दूनिया में वह लड़की इकलौती पीस है। लड़की की तारिफ सुनकर बेचारा बलि का बकरा होना पति तार-तार हो जाता है। मगर पोल तो तब खुलती है जब शादी के चार दिन बीत जाते है।

एक लड़की को शादी के लिए लड़के वाले देखाने के लिए आए। लड़के वालों के सामने लड़की की तारिफ में लड़की की मां बोली-'हमारी लड़की लाखों में एक है। आावाज कोयल जैसी, रंग बत्तख जैसा, ऑखे हिरनी जैसी और चाल मोरनी जैसी है।' लड़के की मा ने बात बीच में ही काटते हुए बोली-'अगर इसमें इंसानों वाली भी कोई बात है या नहीं?

अपने चाहे जितना अकड़ ले। लड़की की तारिफ करे लें। लेकिन वहीं शब्द पति कर ले तो बस पट जबाव हाजिर है। हॉ, अगर पत्नी महोदया की तारिफ की जाय तो तब तो कोई बात नहीं।

पति ने अकड़ते हुए कहा-मै अपने बेटे को मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनाना चाहता हूँ।

हाथ मटकाते हुए पत्नी ने बोला-खूब समझती हूँ, इसलिए न कि तुम दशरथ की तरह तीन-तीन शादियां कर सकों।

पत्नीयों से पति इस कदर प्रताड़ित होते है जिसके लिए कोई शब्द नहीं ढूढा जा सकता । इनके हक की लड़ाई लड़ने वाला तो कोई संगठन भी नहीं है। जब कोई ची आवश्यकता से अधिक हो जाती है आदमी क्या सोचता है

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

फरहान अजमल

२०ए, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद

रेडीमेड शर्ट एण्ड जीन्स ट्राउजर के लिए सम्पर्क करेः

मात्र : १५०० रुपयें में कोट पैन्ट शर्ट

पत्नी-अजी सूनते हो-मै किताब होती तो कितना अच्छा होता।

पति-वो कैसे?

पत्नी-तुम हर समय पढते रहते।

पति-नहीं, कैलेडर होती तो उससे बढिया होता

पत्नी-वो कैसे?

पति-कम से कम, हर साल बदल तो जाता।

पतियों को दो वर्गो में बॉटा जा सकता है। जोरु का गुलाम और दुसरा जोरु का बादशाह।

जोरु का गुलाम, यह नस्ल बहुतायत मात्रा में पायी जाती है। यह बहुत की टिकाउ नस्ल है। दूसरी नस्ल नस्ल है जोरु का बादशाह। यह नस्ल बहुत ही कम मात्रा में पायी जाती है। इनकी संख्या दिन-प्रतिदिन समय की मांग को देखते हुए कम होती जा रही है।

धन्यबाद आप क्या है खुद सोचिए। शेष अगले अंक में।

खुदा हाफिज, सत श्री अकाल, नमस्कार।

मूर्ख दिवस

नारायण 'अज्ञान'

मूर्ख दिवस है आज साथियों
सबकों मूर्ख बनायें।
उन्हें डाल हैरानी में,
हम सब मौज मनायें
हम सब मोज मनायें
नाचे कूदें उछलें गायें
तोतात मैना नहीं बने
तो उल्लू ही बन जायें
उल्लू है लक्ष्मी का वाहन
नहीं कहा जाता है धूर्त
जो न बना उल्लू कभी
उसे समझिए मूर्ख

विद्यार्थी के लक्षण

नकल चेष्टा चिट्ट ध्यानम्
नशेबाजी तथैव च
दीर्घाहारी कलास त्यागी
विद्यार्थी पंच लक्षणम्

महान छात्र

पर्चा जो आउट करें, वे हैं छात्र महान।
उन्हें बहादुर सब कहें, जानै सकल जहान।।
जानै सकल जहान, ध्यान से कभी न पढ़ते
नकल न करने पायें, तो अध्यापक से लड़ते
ऐसे छात्रों की सदा होती रहती चर्चा
अतः साथियों धड़ाधड़ आउट करिये पर्चा

सम्पर्क : "पत्रकार भवन", गँधियॉव करछना, इलाहाबाद

होली की हार्दिक शुभकामनाएं
प्रो० राजेश निर्मल
किसी भी शुभअवसर पर

निर्मल फोटोग्राफर

स्टिल फोटो एवं वीडियोंग्राफी के लिए सम्पर्क करें।

३६५/२७-एफ/२०, चकनिरातुल, चौफटका, इलाहाबाद
६०/४४, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद

मुर्ख दिवस पर विशेष

१ अप्रैल २००२ दिन सोमवार को नैनी, में मूर्ख दिवस पर मासिक पत्रिका '**विश्व स्नेह समाज** 'ने एक हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया। इस आयोजन में विभिन्न क्षेत्रों से आये कवियों ने भाग लिया। कार्यक्रम अध्यक्षता **विश्व स्नेह समाज** के प्रधान संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने की। प्रस्तुत श्रोताओं द्वारा काफी सराही गई रचनाएं......................................

प्रजातंत्र ना इतना सस्ता होता

रजनीश तिवारी 'राज'

यदि मैं संविधान रचियेता होता
मेरे हाथ कानून का रस्सा होता
तब प्रजातंत्र ना इतना सस्ता होता
सफेद पोश नेताओं कि गिनती करवाता।।
देश को बर्बाद करने के जुर्म में
इन पर रसुका लगवाता
हर महीने इनको फौज में भर्ती करवाता
प्रतिवर्ष भारत-पाक से युद्ध करवाता
वार्डर पर हर पार्टी का नेता होता
उसका कमांडर हर नेता का नेता होता
भारत वर्ष का भविष्य तब कितना सुनहरा होता
कन्धों पर इनके ए.के. ४७ होता।।
लम्बी-लम्बी दौड़ करवाता
इनकी बढ़ती तोदों को अंदर करवाता
सर पर कफन का झंडा होता
ना कोई साम्प्रादायिक दंगा होता
ना दो मजहब आपस में लड़ते
सभी अमन चैन से रहते
भारत तब अमरीका जैसा होता
फौज में भर्ती हर सिपाहियों की छुट्टी करवाता
सभी नेताओं की कुर्सी वार्डर पर लगवाता
रात भर इनकों जगवाता
सेनाओं में ऐसा 'मंडल' लाता
भर्ती केवल नेताओं के परिवारों की करवाता
अवकाश ग्रहण जब ये हो जाते
गांवों में इनसे खेती करवाता

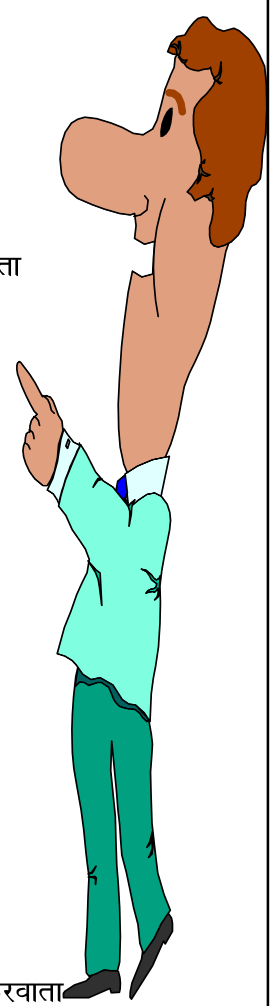

जल्दी वो दिन आएगाजल्दी वो दिन आएगा

भाई तुमको भूल चुका है बेटा भी ठुकरायेगा
जल्दी वो दिन आएगा, जल्दी वो दिन आयेगा
दूध दूर तुम देख रहे हो पानी भी छुप जायेगा
जल्दी वो दिन आएगा, जल्दी वो दिन आयेगा
कैप्सूल झोले में लोगे चावल होगा जेब में
मुश्किल से अमरूद मिलेगा क्या रख्खा है सेब में
महंगाई की मार को खाकर खुद मरीज मर जाएगा
जल्दी वो दिन आएगा, जल्दी वो दिन आएगा।।ॉ।।
चीनी टिकिया में पाओगे इन्जेक्शन में दाल भी
सारी बात हवा में होगी बालू की दीवाल भी
बीच नदी में माझी भी कागज की नाव डुबाएगा
जल्दी वो दिन आयेगा, जल्दी वो दिन आयेगा।।१।।
मंदिर के गलियारे में होती दुकान हज्जाम की
वारंडी के बोतल से बढती है शोभा शाम की
अगर धूप की जगह पुजारी सिगरेट सुलगाएगा
जल्दी वो दिन आएगा, जल्दी वो दिन आएगा।।२।।
रिश्ते तोडे जा सकते हैं बन जाने के बाद भी
बेटी का दुश्मन हो सकता है अपना दामाद भी
''चिरकुट'' चुल्लू में डूबेगा उल्लू गीत सुनाएगा
जल्दी वो दिन आएगा, जल्दी वो दिन आएगा।।३।।

● कुटेश्वर नाथ त्रिपाठी''चिरकुट'' इलाहाबादी

मत रोओ मेरे भाय

१. एक खूबसूरत लड़की के लिए दो रिश्ते आए, लड़की सोचने लगी कि दोनों में से किससे शादी करुँ? फिर उसने सोचा कि क्यों न मैं रिश्ते के लिए कम्प्यूटर से मालूम करुँ। उसने कम्प्यूटर से जानना चाहा कि मैं दोनों में से किससे शादी करुँ। कम्प्यूटर ने कहा कि ये दोनों तुम्हारे लिए ठीक नहीं है। तो लड़की ने पूछा कि मैं किससे शादी करुँ। कम्प्यूटर ने जबाब दिया क्या मैं मर गया हूँ।

२.एक चपरासी : यार, इतने गुस्सें मे क्यों बैठा है?
दूसरा चपरासी : यह मंत्री बेकार में मुझे डांट गया।
पहला चपरासी : अरे, इसमें इतना गुस्सा होने की क्या बात है? डी.एम. को भी मंत्री डांट देता है।
दूसरा चपरासी : हॉ क्यों नहीं यार, एक टेंपरेरी आदमी, परमानेंट आदमी को डांट गया।

३. घड़ी खरीदने गये नेता जी ने दुकानदार से पूछा -'महाशय ये घड़ी कितनी दिन चलेगी?
दुकानदार ने उत्तर दिया : हुजूर, आपकी सरकार से तो ज्यादा ही चलेगी।

४. शादी के कुछ महीने बाद एक पत्नी ने अपने पति से कहा कि आप अपने को ज्यादा अक्लमंद न समझो। जब तुम शादी का प्रस्ताव लेकर हमारे घर आये थे। तो एकदम मूर्ख लग रहे थे।
पति : मूर्ख लग रहा था नहीं, तब मैं बिल्कुल मुर्ख ही था वरना तुम से शादी हीं क्यों करता।

५. एक युवक ने अपने मित्र से कहा- यार, यदि मैं किसी अमीर लड़की से शादी कर लूँ तो मेरी आर्थिक तंगी दूर हो जाए।
युवक मित्र : तो कर क्यों नही लेते।

गिरगिट

मंजूषा शाही

वोट मॉगने निकले नेता ने कहा-
जो दे उसका भी भला
जो न दे उसका भी भला
अगर देगा तो खुशी-खुशी
राजधानी चले जायेंगें
गुलछर्रे उडायेंगें
अगर नहीं देगा तो भी
साम, दाम, दंड, भेद
जैसे भी होगा
दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगें।
चुनाव से पहले
नेता जी ने अनेकानेक वादे किये
ये कहते हुये कि हम बने तुम बने
एक दूजे के लिये।
चुनाव के बाद हमेशा खामोश रहे
और कभी कुछ बोले भी तो
बस इतना कि......
''हम आपके हैं कौन?''

मच्छर भैया

तृप्ति विग

भैया मच्छर
तुम तो निपट गंवार निरक्षर
बेमतलब ही रोज लगाते
इस कमरे में इतने चक्कर।
करते नींद हराम हमारी
व्यर्थ बेसुरी तान छेड़कर।
क्या करना है हमको
ऐसा गाना सुनकर
इससे तो अच्छा लगता है
बजता फूटा हुआ कनस्तर।
बदल गया युग
तुम भी अब अपने को बदलों
जल्दी से पढ़ लो दो अक्षर।
सीखों अब तुम तौर तरीके
देखो नए ढ़ंग से जी के
वरना मारे जाओगे
इस चक्कर में पड़ कर।

नाराज चार्ल्स

बेचारा बकिंघम पैलेस आजकल फिर मीडिया के घेरे में है। चार्ल्स के जीवन में इस मीडिया के कारण ही अशान्ति छाई रही। डायना हमेशा मीडिया के जासूसी से परेशान रही। और अन्त में इसी मीडिया के कारण ही उसकी मौत हो गयी। लेकिन मीडिया ने आज तक इसका पीछा नहीं छोडा है। आज भी ये तांक-झांक हो रही है। हालांकि ये ताक-झांक आज प्रिंस चार्ल्स के अपने ही घर में से हो रही है। हुआा ये कि चार्ल्स के छोटे भाई एडवर्ड ने एक डाक्यूमेंट्री बनाने के लिए अपने भाई से सम्पर्क किया, और आग्रह किया कि वह डायना के बारे में भी कुछ बता दे। इस कारण चार्ल्स बेहद ही नाराज हुए। एडवर्ड चार्ल्स के असफल वैवाहिक जीवन और कैमिला पार्कर से उसके संबंध को लेकर एक फिल्म बना रहे है।

१.न्यूयार्क के जोय ओडोनोग नामक कलाकार २५ फुट गुणा ३० फुट आकार के बर्फ घर बनाते हैं जो २४ घंटे तक जस-तस रहता है।

३. डायना हरफोर्ड इंग्लैंड के ग्लूसेस्टशायर से अमेरिका में जॉयस स्कॉल को एक लिफॉफे में भर कर चिटठी भेजी और वह लिफाफा एक हफ्ते में गंतव्य तक पहुंच गया लेकिन उसके अंदर पत्र गायब था।

४. जापान के योशीकाता यामातोतो एक ऐसी मशीन विकसित की है जो यह बताती है कि एक गायक एक गाना गाने के दौरान कितनी कैलोरी ऊर्जा खर्च करता है।

खोज खबर

बच्चों की तीसरी जुड़वां जोड़ी

कहीं-कहीं औरतें सिर्फ एक संतान पाने के लिए जमीन-आसमान एक कर देती हैं, लेकिन कुछ भाग्यशाली महिलाएं ऐसी भी हैं, जो एक बच्चे के लिए तैयारी करें, तो उनके यहां दो-दो बच्चे जन्म लेतें है। और ऐसा एक बार नही बार-बार होता है। यहां ऐसी ही एक मां ने तीसरी बार जुड़वा बच्चों को जन्म दिया है।

१४ साल पहले उसके यहां पहली जुड़वा जोड़ी को जन्म दिया था। इन दोनों नए बच्चों को मिला कर ३४ वर्षीय लिलियन हेमैन के अब सात बच्चे हो चुके हैं। डॉक्टरों का कहना हे कि ऐसा बहुत कम होता है कि कोई औरत लगातार जुड़वां बच्चों को जन्म दे। लिलियन की मां के परिवार में पहले भी जुड़वां बच्चें हुए हैं। आमतौर पर माना जाता है कि जुड़वा बच्चे होने की प्रवृत्ति आनुवंशिक होती है।

एक उम्र के दो बच्चों की एक साथ देखभाल आसान नहीं है, लेकिन लिलियन को अब इसकी आदत हो चुकी है। हालांकि अब और जुड़वा पैदा करने का उसका कोई इरादा नहीं है। उसे लगता कि अपने बच्चों की इस टीम की देखभाल के लिए अब उसे किसी कोच की जरुरत पड़ेगी।

लिलियन के पति शुआन हर्ले इन दिनों बाकी पांच बच्चों की घर पर देखभाल कर रहा है, जबकि वह अस्पताल में अपने दोनों बच्चों के साथ घर लौटने का इंतजार कर रही है। लिलियन का है, जो इस धरती पर अकेला आया था।

शेरों जैसा आदमी

पोलैंड के विल्जगोरा नामक जगह पर १८६० में एक ऐसा अजूबा इंसान पैदा हुआ जिस के चेहरे के चारों ओर शेरों जैसे बाल थे। पहले पहल तो उस के मां बाप को यह समझ में हीं नहीं अया कि यह लड़कसा है या जानवर। बाद में इंसानों जैसी हरकतें करता देखकर उन्होनें इसे पालने का फैसला किया। और उसका नाम स्टेफिन बैब्रोविस्की। हालांकि बैब्रोविस्की संसार भर में लायलन के नाम से ही प्रसिद्ध हुआ।

लायलन के बाल इतने घने थे कि उसके चेहरे की त्वचा दिखती ही नंही थी, न तो उस के पलकें थी, न हीं भौंहे और दाढ़ी। उस के कानों व नथुनों तक में सैकड़ों बाल थे। लायलन के दांतों की संख्या भी केवल २ थी। जिंदा अचरज के रुप में लायलन संसार भर में प्रसिद्ध हुआ और नुमाइशों के बूते उस जमाने में भी उस ने ५०० डालर हर हफ्ते यानी ३००० रुपये प्रतिदिन की कमाई कीं।

अब पछताएं का होत है जब चिड़ियाा चुग गई खेत.....

दिलीप कुमार गुप्ता

(यह घटना सच्ची है। सिर्फ नाम बदल दिया गया है।)

हमारा देश भारतवर्ष है। इस भारत वर्ष में कई ऐसे महावीर पैदा हुये हैं जिनका नाम दुनिया में सदा-सदा के लिये अमर हो गया है। हमारे देश में कई जाति के लोग रहते हैं लेकिन सबको बराबर का सम्मान दिया जाता है। हमारा देश सभी देशों में सर्वश्रेष्ठ है। लेकिन हमारे देश में इस समय जो सबसे बडी समस्या है वह है दहेज प्रथा रूपी समस्या। यह समस्या इतनी गम्भीर है कि इसको मिटाना किसी एक के बस की बात नहीं है। इसका इतना बोलबाला है कि इसको मिटाने के लिये सभी को साथ-साथ मिलकर इसका मुकाबला करना होगा। और इसे हमेशा के लिये मिटाना होगा। दहेज प्रथा की वजह से कई लोग घर से बेघर हो जाते हैं। उनका घर-परिवार नष्ट हो जाता है।

दहेज प्रथा की बात पर मुझे एक घटना याद आ गयी जो कि एक सच्ची घटना है सिर्फ नाम बदल दिये गये हैं- एक साहूकार का परिवार था। उसके पास भंगवान का दिया हुआ सब कुछ था। उसके घर में हर चीज की सुविधा थी और वह बहुत ही नेक किस्म का इंसान था। लेकिन उसकी पत्नी बहुत ही लालची औरत थी। भगवान की दया से उसके पास वंश चलाने वाला एक पुत्र भी था। जो पढा-लिखा था और अपने पिता की तरह शिष्ट और सदाचारी था। वह पढलिख कर बडा हो गया तो उसकी शादी की बात आई। उसके पिता ने एक लडकी सरोज को देखा, जो पढी-लिखी थी ही साथ में सदाचारी और शिष्ट थी। लेकिन वे लोग बहुत ही गरीब थे। उसके घर में उसके पिता के सिवा कोई नहीं था। सेठजी ने किसी प्रकार उन लोगों को मनाकर शादी के लिये तैयार किया। उसकी शादी हो गयी। लेकिन दहेज के रूप में उन्हें लडकी के सिवा कुछ नहीं मिला। जिससे उसकी मॉ हमेशा नाखुश रहती थी। लेकिन उसके व्यवहार से एवं शिष्टता से उसके पडोसी उसका गुणगान करते नहीं थकते थे।

फिर एक दिन लडके ने देखा कि उसकी मॉ की ऑखों में ऑसू थे। उस लडके ने पूछा कि मॉ तुम्हें मेरी शादी का गुमान था और मेरी शादी भी हो गयी है। फिर तुम्हें किस बात की चिन्ता है? उसकी बातें सुन उसकी मॉ बोली कि मेरे मन की शादी कहॉ हुई है। जब तक मेरे मन की शादी नहीं होगी तबतक मेरा हाल यही रहेगा। मॉ के जोर दबाव के कारण अपने मामा की लडकी के साथ शादी करनी पडी। इस दूसरी शादी से उसे बहुत सारा दहेज तो मिला ही साथ ही एक उद्‌दण्ड पत्नी भी मिली। दहेज के कारण उसकी मॉ बहुत ही खुश रहती थी। उसकी मॉ हमेशा कहती कि उसकी दूसरी बहू बहुत ही अच्छी है।

आप लोग ये नहीं जानते कि यह लडकी किस चरित्र की थी? दरअसल यह बहुत ही गिरी हुए चरित्र की लडकी थी। वह अपनी बडी बहन सरोज का अपने धन के घमण्ड के कारण आदर नहीं करती थी। लेकिन वह बेचारी इन सबका जुल्म सह लिया करती थी। छोटी-छोटी सी बात पर उसे हमेशा मार पडती थी , लेकिन वह यह हाल किसी से भी नहीं कहती थी। जिससे उन लोंगों का मनोबल और बढता गया। एक बात और कि दूसरी पत्नी का चक्कर उसी गॉव के एक लडके से था। जिससे उसका खत उसके पास आता रहता था। उसके पास इस समय २० से भी अधिक खत थे। एक दिन उसने अपने सारे खत उसने उठा कर अपनी बडी बहन सरोज के बक्से में रख दिया और जा कर सास से बताया कि देखो, दीदी के पास एक खत आया है और उन्हेंाने उसे अपने बक्से में र,ख रक्खा यह सुन कर सास ने कहा कि शाम को जब मेरा बेटा आयेगा तो

उसी से खत को पढवाया जायेगा। शाम को जब उसका लडका आया तो उसकी मॉं ने वो खत मॅंगवाये और पढवाया तो पता चला और उन्होंने पहली वाली बहू को कोसना और गाली देना शुरू किया। जब कि सरोज को यह नहीं पता था कि बक्से में खत भी है। इस तरह जब उसे मार पडती गयी तो उसने कहा कि ''नहीं स्वामी, यह मेरे खत नहीं हैं। किसने मेरे बक्से में ये खत रखे मुझे नहीं पता।'' लेकिन उसके पति ने उसकी एक बार भी बात नहीं सुनी और उसे मारता ही रहा। वह बार-बार चिल्लाती रही और कहती रही कि ''ये खत मेरे नहीं हैं।'' लेकिन उसके पति के सिर पर न जाने कौन सा भूत सवार हो गया था कि उसने हण्टर से मार-मार कर सरोज का बुरा हाल कर दिया। और सरोज बेहोश हो गयी। जब वह बेहोश हो गयी तो उसे उठा कर सडक पर फेंक दिया। संयोग से उस लडकी के गॉंव का एक रिक्शे वाला वहॉं से गुजरा तो उसने उस बेहोश लडकी को उठा कर देखा तो उसे पता चला कि यह तो अपने तरफ की है। रिक्शेवाले ने उसे उठाकर उसके घर पहुॅंचा दिया। और जब उसे होश आया तो उसने देखा कि वह अस्पताल में है और उसका बूढा पिता खडा है। फिर उसने अपने पिता से वहॉं का सारा किस्सा कह दिया और इस प्रकार सरोज अपने पिता के पास रहने लगी।

इधर जब उन्होंने सरोज को भगा दिया तो वह दूसरी लडकी और आजाद ख्याल की हो गयी।एक दिन वह अपने कपडे सूटकेस में रखकर वहॉं से चली गयी। जब कुछ दिन गुजर गये तो सास बोली कि बेटा जाकर बडी बहू को ले आओ। घर सूना-सूना लगता है। फिर वह लडका सरोज के घर गया तो देखता है कि सरोज के घर के सामने भीड लगी हुई थी। लडके ने उनमें से एक आदमी को बुलाकर पूछा तो उस आदमी ने बताया कि इस लडकी के ससुराल वालों ने इसपर जो झूठा आरोप लगाया था उसी की सोच में इस लडकी ने दम तोड दिया। और इस गम को उसके पिता भी नहीं सह सके और वह भी चल बसे। इस प्रकार इन दोनों का अन्त हो गया। यह सब सुनकर वह रोता रह गया और अपने किये पर पछताता रहा। फिर उसने सोचा कि अब वह अपनी दूसरी पत्नी को बुला लावे। और वह अपनी दूसरी पत्नी के घर गया तो वहॉं वह देखता है कि ना ही उसकी पत्नी है और ना ही कोई खुशी का माहौल है। वह अपने सास-ससुर से पूछता है कि उसकी पत्नी कहॉं है? तो वे लोग कुछ नहीं बताते हैं। तभी पडोसी का एक लडका आकर बताता है कि उनकी पत्नी गॉंव के ही एक लडके के साथ भाग गयी है। जब वह यह सुनता है तो वह वहॉं से भागता हुआ अपनी मॉं के पास आता है और रोते हुए सारा हाल कह सुनाता है। इस प्रकार उसकी मॉं को भी पश्चाताप होता है कि यदि वह दहेज के लोभ में दूसरी शादी न करती तो यह दिन देखने को न मिलता। इस प्रकार वह लडका अपनी पत्नियों की सोच में दिन-रात शराब में डूबा रहता था और एक दिन ऐसा भी आया कि वह शाम को दारू पीकर सो गया और फिर कभी भी नहीं उठा और लडके का अन्त हो गया। फिर एक दिन उस घर को डाकुओं ने लूट लिया और घर में आग लगा दी। इस प्रकार उस परिवार का अन्त हो गया।

ग ज़ ल

सुधीर कटियार

ये हॅंसते चेहरे दुनिया के हसने से अच्छे लगते है।
ये अपने दर्द छुपाये हुये दुनिया के दर्द बताते है
ये अपनी तो कुछ कहते नहीं दुनिया की कहते रहते है
जो खुशी नहीं दे सकते वो गम के सिवा तुम्हें क्या देगें
दिन रात ये शिकवा करते है अहसान सभी पर करते है।
ये अपनी तो कहते नहीं दुनिया की कहते रहते है।
ये दर्द की बाते ंक्या जाने खुशियों के साथ ही रहते है
हर मौसम के साथ-२ चेहरों के रंग बदलते है
ये अपनी तो कुछ कहते नहीं दुनिया की कहते रहते है।

इरादे

मुश्किलें दिल के इरादे आजमाती है
स्वप्न के पर्दे निगाहों से हटाती है
हौसला मत हारना गिरकर मेरे दोस्त
ठोकरे इंसान को जीना सिखाती है
जिन्दगी जब किसी बिछुड़े दोस्त की
बात करती है
वरबस मेरे होठों पर तेरा नाम मचल जाता है।

आइये हम प्यार बॉंटने की कला सीखें

चलिए हम इस पन्ने पर एक बच्चे की नयी जिन्दगी/एक असहाय की सेवा के नाम लिखें-

जी हॉं, आप किसी की उजड़ी जिन्दगीं में फर्क ला सकते हैं और वो भी मात्र एक रुपये में।

मैं एक बच्चे की पढ़ाई के लिए/असहाय की सेवा के लिए/विधवा के लिए रु० ३०/-प्रति माह (रु०३६०/-वार्षिक) दे रहा हूॅं। मैं जी०पी०एफ०सोसायटी के नाम से चेक/मनिआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/ कैश भेज रहा हुॅं।

नाम : ....
पिता का नाम : ....
व्यवसाय : ....
पता : ....
....

हमारा पता :
जी०पी०एफ०सोसायटी,
नितिन काम्पलेक्स, मेवा लाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद-८

ज्ञानेन्द्र सिंह, एडवोकेट, हाईकोर्ट

सम्पत्ति में स्त्री का हक

हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम १६५६ के लागू होने से पूर्व महिला को सम्पत्ति में सीमित अधिकार मिलते थे। इस अधिनियम के लागू होने से पूर्व स्त्री की सम्पत्ति को दो भागों में विभक्त किया जाता था-

१. स्त्रीधन २. स्त्रीसम्पदा

स्त्रीधन को स्त्री की पूर्ण सम्पत्ति माना जाता था अर्थात् उस पर स्त्री का निरपेक्ष स्वामित्व होता था। वह उस सम्पत्ति का मनचाहा उपभोग तथा अन्तरण कर सकती थी। मनु के अनुसार इस सम्पत्ति को स्त्रीध ान में शामिल किया गया था। कन्या के विवाह के समय एवं अग्नि के समक्ष कन्या को दिये गये उपहार।१. कन्या के विवाह के बाद ससुराल के लिये विदा करतें समय दिये गये उपहार। २. स्नेहवश दिये गये उपहार ३. पिता, माता एवं भाई के द्वारा दिये गये उपहार। ४. सास-ससुर के पॉव छूने पर दिये गये उपहार। ५. विवाह के समय या विवाह के पश्चात् पति द्वारा दिये गये उपहार।

इन सभी उपहारेंा पर स्त्री का निरपेक्ष स्वामित्व होता था। स्मृति ने भी उसी सम्पत्ति को स्त्री धन माना था, जो वधू को विवाह के पूर्व, विवाह के समय एवं उसके पश्चात् रिश्तेदारों एवं पति द्वारा स्नेहपूर्व उपहार में दी गयी हो।

कात्यायन ने स्त्रीधन में कुछ और सम्पत्ति को सम्मिलित किया है। किसी स्त्री द्वारा अपने कौशल से अर्जित किया धन भी स्त्रीध ान है। स्त्रीधन से भिन्न स्त्री सम्पदा होती है। कमला देवी बनाम बचूं १६५७ सु० को० ४३४ के प्रकरण में माननीय उच्चतम न्यायालय ने कहा-''संयुक्त परिवार के विभाजन से जो सम्पत्ति विधवा स्त्री को मिलती है, वह सम्पदा उसकी मृत्यु के बादउसके पति के उत्तराधि ाकारियों के पास चली जायेगी अर्थात् स्त्री सम्पदा का स्त्री जीवनपर्यन्त मनचाहा उपयोग एवं उपभोग कर सकती है। लेकिन उसका अन्तरण नहीं कर सकती। वह स्त्री सम्पदा का मनचाहा अन्तरण एवं व्ययन धार्मिक कार्य एवं विधिक आवश्यकता के लिये ही कर सकती थी। स्त्रियों के अधिकारों को ध्यान में रखते हुए हिन्दू स्त्री अधिनियम १६३७ पारित किया गया, जिसके द्वारा प्रथम बार हिन्दू विध ावा को उसके पति की सम्पत्ति से उत्तराधि ाकार एवं बॅटवारे का अधिकार मिला, लेकिन यह अधिकार उसे जीवन पर्यन्त उपयोग एवं उपभोग करने का था। उसकी मृत्यु के पश्चात् वह सम्पत्ति पति के उत्तराधिकारियों को स्वतः प्राप्त हो जायेगी।

हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम १६५६ के पारित होने के पश्चात् स्त्रियों के सम्पत्ति के अधिकार में एक अपूर्व परिवर्तन हुआ। इस अधिनियम की धारा १४(१) के तहत अब स्त्री का उसकी सम्पत्ति एवं सम्पदा पर पूर्ण अधि ाकार होगा। इस धारा की उपधारा (१) के तहत अधिनियम के लागू होने के पूर्व एवं पश्चात् स्त्री के पास जो भी सम्पदा है, स्त्री के कब्जे में है, वह उसकी निरपेक्ष स्वामिनी हो जायेगी। वह सम्पदा स्वयं के कौशल से अर्जित हो, चाहे ऐसी सम्पत्ति जो स्त्री बॅटवारे एवं वसीयत से मिली हो, भरण-पोषण अथवा भरण-पोषण के बकाया रूप में मिली हो, विवाह के पूर्व या पश्चात् दान या उपहार में मिली सम्पत्ति, विधवा स्त्री को उसके भरण-पोषण में मिली सम्पत्ति, सभी की स्त्री निरपेक्ष स्वामिनी मानी गयी है। इस सभी प्रकार की सम्पदा का स्त्री मनचाहा उपयोग, उपभोग एवं अन्तरण कर सकती है। स्त्री के निरपेक्ष स्वामित्व पर अधिनियम द्वारा कुछ प्रतिबन्ध लगाय गया है कि डिक्री, दान, वसीयत एवं किसी आदेश के अधीन प्राप्त सम्पदा पर स्त्री का निरपेक्ष स्वामित्व नहीं होगा।

दीनदयाल बनाम राजाराम १६७१ (१) एस०सी०सी० ७८६ के प्रकरण में माननीय उच्चतम न्यायालय ने कहा कि कब्जे में केवल भौतिक कब्जे को ही सम्मिलित नहीं किया गया, बल्कि आन्वयिक कब्जे को भी सम्मिलित माना है। यदि स्त्री की सम्पदा पर किसी न्यासी एवं संरक्षक का कब्जा है, तो भी उस स्त्री का कब्जा माना जायेगा।स्त्री सम्पदा को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है- १-स्वअर्जित सम्पत्ति और २-संयुक्त कुटुम्ब की सम्पत्ति।

स्वअर्जित सम्पत्ति का तात्पर्य है, उस व्यक्ति की निरपेक्ष सम्पत्ति, जिसके कब्जे मे है। स्वअर्जित एवं स्वयं के कौशल से प्राप्त सम्पत्ति पर उसके जीवित रहते किसी अन्य व्यक्ति का अधिकार नहीं होता।वह अपनी सम्पत्ति का मनचाहे ढंग से व्यसन कर सकता है, लेकिन इस संबंध में भी हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम की धारा ८ में यह प्रावधान है कि यदि ऐसा व्यक्ति बिना कोई वसीयत करे मर जाता है, तो उसकी सम्पत्ति उत्तराधिकार में अनुसूची एक में वर्णित उत्तराधिकारियों को प्राप्त होगी। अनुसूची एक में पुत्र, पुत्री, विधवा, माता एवं माता के उत्तराधिकारी है।इसमें पूर्व मृत पुत्र की पुत्री ,पूर्व मृत पुत्री का पुत्र , पूर्व मृत पुत्र की विधवा ,,पूर्व मृत पुत्र का पुत्र ,पूर्व मृत पुत्र के पूर्व मृत पुत्र की विधवा को भी सम्मिलित किया गया है।

इस प्रकार हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम के अर्न्तगत स्त्री को सम्पत्ति में मालिकाना हक प्राप्त हो गया है।

संयुक्त कुटुम्ब की सम्पत्ति को पैतृक सम्पत्ति भी कहा जाता है। उस सम्पत्ति में पुत्र और पौत्र का जन्मतः अधिकार होता है। संयुक्त कुटुम्ब की सम्पत्ति में से स्त्रियों के केवल भरण-पोषण एवं अविवाहित लडकियों के विवाह का व्यसन किया जाता था, लेकिन हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम की धारा ६ में स्त्रियों को भी संयुक्त कुटुम्ब की सम्पत्ति में से हिस्सा पाने का अधिकार दे दिया गया है।

इस धारा के तहत स्त्री का यदि कोई स्त्री उत्तराधिकारी जीवित है, तो वह सम्पत्ति पहले उसे प्राप्त होगी। यदि पुत्र एवं पुत्री दोनेंा हैं, तो पुत्र उत्तराधिकार का दावा नहीं कर सकता।

अधिनियम की धारा १५ के अनुसार यदि कोई स्त्री बिना वसीयत के मरती है, तो उसकी सम्पत्ति सर्वप्रथम उसके पुत्रों ,पुत्रियों एवं पति को, तत्पश्चात् पति के उत्तराधि ाकारियों को, माता-पिता को, तत्पश्चात् पिता के उत्तराधिकारियों को मिलती है। यदि औरत को कोई सम्पत्ति उसके माता-पिता से मिलती है, तो उसकी मृत्यु को पश्चात् यदि उसके पुत्र या पुत्री नहीं है, तो वह सम्पत्ति उसके पिता के वारिसों को मिलेगी।

यदि स्त्री को उसके श्वसुर से सम्पत्ति मिली है, तो वह सम्पत्ति उसके बच्चे न होने पर पति के वारिसों को मिलेगी। यह अधिनियम लागू होने के पश्चात् सम्पत्ति के हक में स्त्री-पुरूष में विशेष अन्तर नहीं रह गया है।

कुछ काम की बातें

✍सफेद स्पोर्ट्स शूज को साफ करने के लिए उन्हें पहले साबुन से धोए। इसके बाद आधा बालटी पानी में एक-चौथाई चम्मच साइट्रिक एसिड डालकर जूतों को उसमें डुबा दें। इससे जूतों पर लगे सभी दाग-धब्बें साफ हों जाएंगे।

✍खुजली होने पर नारियल और नीम के तेल में गंधक मिलाकर दिन में तीन-चार बार लगाने से आराम मिलता है।

✍यदि आप बालों में अतिरिक्त चमक लाना चाहती है, तो शैंपू करने के बाद एक नीबू के रस में एक-दों चम्मच सिरका मिलाएं और इससे बालों को धोएं।

✍गुड़हल के पत्तों को पीस लें और इससे बालों को साफ करें। बालों में चमक आ जाएगी।

✍यदि कपड़े पर लिपिस्टिक के दाग लग गए हों, तो उस जगह को पहले पानी से ध ोएं। इसके बाद वहां टूथपेस्ट रगड़ दें और फिर साबुन से धों दें। दाग-धब्बे गायब हो जाएंगे।

✍यदि आप सिरदर्द से परेशान है, तो सिर ें शुद्ध घी से मालिश करें। राहत मिलेगें।
चाय बनाने के बाद पत्तियों को फेंके नहीं, बल्कि उन्हें लॉन या फूलों के गमलों में छिड़क दें। चाय की पत्तियों खाद का काम करेंगी।

✍यदि मिर्च काटने के बाद आपके हाथ जल रहे हों, तो हाथों को इमली के पानी से या पानी में नीबू और चीनी मिलाकर धोएं। जलन से राहत मिलेगी।

✍किसी बरतन में एक-दो कप पानी डालें और उसमें नीम के ८-१० पत्तों को डालकर रातभर के लिए छोड़ दें। सुबह उठकर पानी को पी जाएं। इससे त्वचा स्निग्ध बनी रहेगी।

✍चीज बॉक्स में एक चुटकी चीनी डाल दें। इससे चीज में फ्रेंशनेस बनी रहती है।

✍शहद की शीशी में दो-तीन लौंग डाल दें। इससे शहद पांच-छह महीने तक खराब नहीं होगा।

✍सुबह-शाम एक-एक लौंग का सेवन नियमित रुप से करें। इससे सांसो की दुर्गन्ध दूर करने में मदद मिलती है।

शुभकार्यों में पति और पत्नी के बैठने का शास्त्रीय दृष्टिकोण

वैदिक अनुष्ठानों व शुभ कार्यों में प्रायः यह देखा जाता है कि पति और पत्नी के बैठने को लेकर वाक्युद्ध शुरू हो जाता है। एक पक्ष कहता है कि पति को दायें बैठना चाहिये और दूसरा कहता है कि बायें। और यह विवाद का रूप दे दिया जाता है। विशेषकर महिला वर्ग में यह भ्रान्ति है कि पत्नी सदैव पति के बायें भाग में ही बैठती है। परन्तु हमेशा नहीं। शास्त्र की मर्यादा के अनुसार पति और पत्नी के बैठने का स्थान निश्चित किया गया है जो कि निम्न है-

१. व्रत में, विवाह में, भोजन करते समय, दान देते समय, यज्ञ में तथा श्राद्ध में पत्नी को पति के दाहिने तरफ रहना चाहिये। अपितु सभी धर्म कार्यों में पत्नी दक्षिण भाग में शुभ है। किन्तु अभिषेक या राज्यारोहण तथा ब्रह्माणादि के पैर धोने के समय पत्नी को वाम भाग में शुभ माना जाता है।

२. कन्यादान, विवाह, प्रतिष्ठा, यक्षकर्म तथा समस्त धर्म कार्यों में भी पत्नी सदैव पति के दायें भाग में। हवन, देवपूजा में दायें भाग में और पति सेवा तथा रतिकाल में वाम भाग में रहे। जातकर्म आदि संस्कारों में पति के दक्षिण भाग में बैठे। पितृ श्राद्ध में बायें परन्तु आभ्युदयिक नान्दी श्राद्ध में और मधुपर्क प्राशन के समय पत्नी दक्षिण भाग में रहे।

३. जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन और निष्क्रमण संस्कार के समय पत्नी तथा बालक दोनों पति के दायीं ओर बैठे।

४. युद्ध के समय स्त्री को पीठपीछे, मार्ग में आगे रक्खे। ऋतुकाल में वामभाग में तथा पुष्यकाल (समस्त धार्मिक कार्यों) में पत्नी पति के दायी ओर रहे।

५. आर्शीवाद ग्रहण करते समय, अभिषेक के समय, ब्राह्मणों के चरण धोते समय, शयन और भोजन करते समय पत्नी पति के वाम भाग में रहे।

६. सिन्दूर दान के समय और द्विरागमन के समय इच्छुक पत्नी वाम भाग में रहे।

७. उपर्युक्त उल्लेखित मर्यादाओं के अनुसार ही पति और पत्नी अपने दायें और बायें स्थान पर बैठकर लाभ प्राप्त करें। क्योंकि धर्मानुष्ठान की सभी क्रियायें अदृष्ट फल को देने वाली होती है। जिसका फल चर्म चक्षु गम्य नहीं होता, मात्र अनुभव किया जाता है। शास्त्र के अनुसार सभी विधान मंगलमय सुखसमृद्धि द्योतक व श्रेयस्कर होते हैं। अतः विचार की दृष्टि से ऐहलौकिक कृत्य जैसे पत्नी की मॉग में सिन्दूर भरना, आर्शीवाद ग्रहण करना, भोजन, शयन, काम क्रीडा आदि के समय पत्नी को पति के बायें भाग में तथा पारलौकिक कृत्य जैसे-कन्यादान (विवाह), देव प्रतिष्ठा, यज्ञानुष्ठान और जातकर्म आदि संस्कार में पत्नी के दायें भाग में ही रहते हुए आत्मोन्नति प्राप्त करते हैं।

अतः ब्राह्मणों व जनमानस से पुनः यह कहना चाहूँगा कि शास्त्र निर्दिष्ठ स्थान पर ही पति और पत्नी बैठावें या स्थान दें। तभी अपना व अपने यजमान का कल्याण अवश्यम्भावी है।

होली की सभी नगर वासियों की हार्दिक शुभकामनाएं
श्री साई बाबा टी स्टाल
कोल्ड ड्रिक्स, पेप्सी के थोक व फुटकर विक्रेता
प्रो० संजय गुप्त
२२/२३, सब्जी मंडी, खुल्दाबाद

लोकप्रियता में अपना जवाब खुद थे 'छुन्नन गुरु'

इलाहाबाद को इस बात का गर्व रहेगा कि यहॉ कल्याण चन्द्र मोहिले 'छुन्नन गुरु', सालिकराम जायसवाल, हेमवती नंदन बहुगुणा जैसे हर दिल अजीज जन प्रतिनिधि रहे हैं। छुन्नन गुरु ने अपने समकालीन राष्ट्रीय नेताओं के बीच जिस तरह अपनी अलग पहचान बनायी थी वह केवल उनके जैसे व्यक्ति के लिए ही संभव था। उनकी सहजता, निर्भीकता, निःस्वार्थ सेवा भावना के कारण उन्हें जीवन काल में ही वह दर्जा मिल गया था जो बिरलें को ही नसीब होता है।

छुन्नन गुरु के पिता का नाम कन्हैयालाल मोहिले उर्फ सटल्लू महराज था। वे खत्रियों के पुरोहित थे। लोकनाथ से खेमामाई के मन्दिर की ओर जाने वाले रास्ते पर मन्दिर से थोड़ा पहले बायीं ओर 485 अहियापुर में (अब 566–567 मालवीय नगर) उनका मकान था। यह मकान उन्हें एक खत्री रईस ने पुरोहिती में दिया था। छुन्नन गुरु के दो और भाई थे–कालिका प्रसाद मोहिले उर्फ मुन्नन गुरु तथा कमला प्रसाद मोहिले उर्फ कुन्नन गुरु। तीनों भाइयों ने सी0ए0वी0 कालेज, जो पहले स्कूल था, में शिक्षा पायी। छुन्नन गुरु कक्षा छह और कुन्नन गुरु कक्षा तीन तक ही पढ़ पाये। मुन्नन गुरु के दो पुत्र पूरन चन्द्र तथा विमलचन्द्र अभी हैं। पहले रेलवे तथा दूसरे रोडवेज से रिटायर हो चुके हैं। उनके एक पुत्र पन्नालाल मोहिले रेलवे में गार्ड थे, जिनका 1973 में निधन हो गया था।

छुन्नन गुरु संघर्षशील व्यक्ति थें। दूसरे का दुख दर्द वे आगे बढ़कर बॉटते पर अपने दुख की लोगों को भनक नहीं लगने देते थे। उन्होनें चौक में कपड़े की दलाली, खत्रियों की पुरोहिती तथा सायकिल मरम्मत की दुकान से अपना काम चलाया लेकिन कभी बड़े फायदे के चक्कर में नहीं रहे। अगस्त 1947 में वे भारत विभाजन का विरोध करते हुए जेल गये थे। भारत विभाजन के समर्थक राजगोपालचारी जब इलाहाबाद आये तो छुन्नन गुरु ने उन्हें काले झंडे दिखाये। लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रबल पक्षधर पंडित जवाहर लाल नेहरु की उपस्थिति में पुलिस ने जिस बेरहमी से छुन्नन गुरु और उनके साथियों की पिटाई की थी उससे उनके कपड़े तार–तार हो गये थे और शरीर लहूलुहान हो गया थां नेहरु जी ने बाद में इस घटना का जिक्र दिल्ली में पत्रकारों से किया किन्तु बेरहमी से की गयी पिटाई पर खेद व्यक्त नहीं किया था। छुन्नन गुरु एक बार नेहरु जी का विरोध करने के लिए दस हजार लोगों के साथ फूलपुर गये थें।

छुन्नन गुरु ने 1953 के चुनाव में नेहरु जी के परम विश्वस्त पंडित विश्वम्भर नाथ पांडेय को हराया। यह वह समय था जब कांग्रेस यह दावा किया करती थी कि अगर उसके नाम पर खंभा भी खड़ा कर दिया जाये तो वह जीत जायेगा। 1957 में कांग्रेस ने जातीय गणित का दॉव चलकर समर्पित कांग्रेसी बैजनाथ कपूर को खत्रियों का वोट काटने के लिए छुन्नन गुरु के खिलाफ खड़ा किया। श्रीमती इंदिरा गॉधी उस समय नगर कांग्रेस कमेटी की अध्यक्ष थीं। उन्होनें अपनी पूरी ताकत झोंक दी। वे छुन्नन गुरु के खिलाफ प्रचार करने के लिए छोटी संकरी गलियों तक में घर–घर गयी किन्तु मतदाताओं ने बैजनाथ कपूर को नापंसद कर दिया। यही कहानी 1962 में भी दोहरायी गयी। इस बार भी कांग्रेस ने बैजनाथ कपूर को प्रत्याशी बनाया था। 1967 में छुन्नन गुरु ने कांग्रेस के उम्मीदवार रामचन्द्र वैश्य को शिकस्त दी। इस तरह छुन्नन गुरु के जीवन में कांग्रेस उनसे यह सीट नहीं छीन पायी।

अगस्त, 1967 में अपने घर में सीढ़ियों से गिर जाने से छुन्नन गुरु की रीढ़ की हडडी में गंभीर चोट आयी। उन्हें बेली अस्पताल में भर्ती किया गया। वे ठीक भी हो गये थे परन्तु 14 अक्टूबर को उनके मस्तिष्क की शिरायें फट जाने के कारण उनका निधन हो गया। सारा नगर शोक में डूब गया। उनकी शव –यात्रा में हर वर्ग के लोग शामिल हुये, जो उनकी असीम लोकप्रियता का प्रतीक था।

छुन्नन गुरु इलाहाबाद केनिंग कपनी, रोडवेज समेत तमाम श्रमिक संगठनों से जुड़े थे। वे बुजुर्गो की आशा का केन्द्र तथा नौजवानों के सरपरस्त थे। मुँह में पान, घनी मूछे, हाथ में सोटा तथा चेहरे पर सहज मुस्कान लिये वे हमेशा जन–सेवा के लिए तत्पर रहते थे। इलाहाबाद में मेडिकल कालेज, इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना की मांग उन्होनें सबसे पहले की थीं। वे लोकनाथ व्यायामशाला के संस्थापक थे। कल्याणी देवी में हनुमान मंदिर (कल्याण गढ़) की स्थापना उन्होंने ही करायी थी। पजावा रामलीला कमेटी के वे आजीवन मंत्री रहें। जब नगर में वर्षो रामलीला नहीं हुई तो उसे फिर से शुरु करने के लिए आन्दोलन चलाने वालों मे वे भी थे।

छुन्नन गुरु के परम मित्रों में जगन काका, मुन्नू लाल केसरवानी, बब्बू खत्री, मूलचन्द्र मालवीय, गुलाब मालवीय, श्रीराम मेहरोत्रा, महादेव कुशवाहा, रामकिशोर खन्ना, प्रेमचन्द्र अग्रवाल थे। वे रविवार व्रत रखते और उस दिन वे कहीं भी होते तो भी गंगा स्नान के लिए जरुर जाते। इस अवसर पर जगन लाल सर्राफ तथा गुलाब मालवीय उनके साथ रहते। चुनावों में मुसलमानों का एक बड़ा वर्ग उन्हें हमेशा कांग्रेस के खिलाफ मदद करता था और वे भी उनकी इस मैत्री का मान रखते थे।

छुन्नन गुरु प्रातः 6 बजे उठते। हुक्का पीने के बाद वे अपने घर के नीचे के कमरे में बैठकर 10–11 बजे तक लोगो से मिलते। उसके बाद खा–पीकर लोगों के काम के लिए घर से निकलते। दो–तीन बजे घर से लौटते और शाम को एक बार फिर जनसंपर्क के लिए निकल जाते। चौक में चुन्नूलाल पंसारी, बहादुरगंज में राजाराम लोहेवाले तथा जीरोरोड में पारसनाथ त्रिपाठी की दुकान पर उनकी प्रायः हर दिन बैठकी होती। गुरु घर पर न मिलते तो लोग उनके अडडों पर मिल लेते थे।

छुन्नन गुरु वक्त के पांवद थे। गुरुता और बचपने का उनमें अद्भुत मिश्रण था। वालीबाल का मैच देखने, दंगल देखने, होली खेलने में, जुलूस में, सभा में, फोटो खिंचाने में, मोटर में बैठने में, किसी के यहॉ विवाह या गमी में पहुँचने वालों में से वे सबसे पहले होते थे। वे नाराज होते थे पर उनका गुस्सा थोड़ी ही देर मे कपूर ही तरह उड़ जाता था। उनकी बैठक में मिट्टी का एक बूढ़ा और बुढ़िया थी, वे खाली समय में स्प्रिंग पर टिके उनके सिर को हिलाकर बच्चों की तरह हॅसते थे। एक बार वे मई–जून की गर्मी में अपने कमरे में विश्राम कर रहे थे तभी मदद मांगने आये किसी आदमी ने दरवाजे की कुंडी खटखटायी। गुरु थोड़ी देर पहले ही आये थे अतः उनके भतीजे ने उससे कहा तुम जाओ गुरु सो रहे हैं। वह जाने लगा। गुरु को किसी के आने का आभास हुआ। वह आदमी लगभग सौ मीटर चला गया था। गुरु ने भतीजे को दौड़ाकर उसे बुलवाया और उसकी बात सुनी। इस तरह गुरु अपना जबाव खुद थे।

बच्चों पर टी०वी० का प्रभाव

सुजाता गुप्ता

कुछ दिनों पहले अखबार में यह खबर छपी कि एक आठ साल का बच्चा चौथी मंजिल से नीचे कूद गया। क्योंकि शक्तिमान धारावाहिक देखकर वह इतना उत्साहित हो गया था कि समझने लगा कि शक्तिमान उसे भी बचाने अवश्य आयेगा।

सोलह साल की एक लडकी अपने वस्त्रों के चुनाव को लेकर माँ से कहती है कि आप को क्या प्रॉब्लम है, मॉम? जिन्दगी मेरी है, मैं अपनी पसन्द से जीऊँगी, जो चाहे पहनूँ, जैसे चाहे रहूँ।

ममा, कल वेलेन्टाइन-डे है। कल मैं सारा दिन बिजी हूँ। आप अपना कार्यक्रम परसों बनाइये।

अरे, कल ही तो १४ फरवरी है। और राजू का बर्थ डे भी कल ही है। परसों कैसे जायेंगें? और ये वैलेन्टाइन-डे क्या चीज है?

क्या आप देखती नहीं कि टी०वी० में कब से वेलेन्टाइन-डे का प्रचार आ रहा है।

ये वे कुछ दृश्य हैं जो टी०वी० संस्कृति की देन है। चाहकर भी हम और हमारे बच्चे उसके प्रभाव से बच नहीं सकते। अभी गत दिनों ही अखबार में पढा था कि एक धारावाहिक में युवा नायक की मौत ने दर्शकों को इस कदर विचलित कर दिया कि वे सब धारावाहिक के निर्माता के घर पर पहुँच गये।

ये टी०वी० रूपी होम थियेटर घर-घर की कहानी बन चुकी है। यह लोगों के जीवन का एक जरूरी हिस्सा बन चुका है। इतना जरूरी हिस्सा कि लोगों की दिनचर्या टी०वी० के कार्यक्रमों के हिसाब से बनती है।जैसे दोपहर के एक बजे तक खाना खा लेना है, क्योंकि कोई प्रिय कार्यक्रम आने वाला है। शाम को बच्चों का बाहर खेलना बन्द हो गया है, क्योंकि उससमय उनका मनपसन्द कार्यक्रम कार्टून आता है। रात को देर से सोना है, क्योंकि उनके फेव्रेट कार्यक्रम ग्यारह बजे तक चलते हैं।लोगों का कहना है कि टी०वी० देखना बहुत जरूरी या फिर बहुत ही अच्छा है, बशर्ते हम कार्यक्रमों का चुनाव अक्लमंदी से करें। टी०वी० कब, कितना देखाना है और कौन-कौन से कार्यक्रम देखाना है,इसमें अगर हम बडों के मार्गदर्शन का सहारा लेगें तो ज्यादा फायदे में रहेंगें।कुछ प्रोग्राम तो हमें दुनिया भर की जानकारी देकर हमें अप-टू-डेट रखते हैं। टी०वी० हमें देखना चाहिये, परन्तु इतना भी नहीं कि अंधाधुंध देखें। ऑखों का इस्तेमाल केवल टी०वी० देखने के लिये ही नहीं बल्कि अपने चारों ओर देखने के लिये भी करें। और साथ ही दिमाग का इस्तेमाल भी करें, अपना अच्छा, बुरा समझने के लिये। फिर तो हमें हर चीज के अच्छे ही प्रभाव मिलेंगें।

क्या आप जानते है

☺फ्रांस की राष्ट्रीय रेलवे ने सन् १९५१ में पहली सुपर फास्ट गाड़ी शुरु की। इसकी अधिकतम गति थी दो सौ किलोमीटर प्रतिघंटा परीक्षण काल में फ्रांस की रेलवे ने ३३१ किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार भी दर्ज की थी, जो ३२ वर्षो तक सर्वोपरि था।

☺ग्रांड सेंट्रल टर्मिनल (न्यूयार्क सिटी) विश्व का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन है।

☺स्वीडन में विश्व का सबसे बड़ा रेलवे प्लेटफार्म है। जिसकी लम्बाई २४६० फीट है।

☺१६ अप्रैल सन् १८५३ में लार्ड डलहौजी द्वारा भारत में प्रथम रेलवे लाइन का उद्घाटन हुआ

☺भारत में रेलवे बोर्ड की स्थापना मार्च १९०५ में लार्ड कर्जन के शासन काल में हुई। भारतीय रेलों की सारे देश में फैली लम्बाई साठ हजार किलोमीटर से अधिक है।

☺खड़गपुर भारतीय रेलवे का सबसे लम्बा प्लेटफार्म है।

☺भारत में सबसे तेज गति से चलने वाली रेल गाड़ी शताब्दी एक्सप्रेस है।

☺वर्तमान समय में एक रेलवे स्टेशन लगभग एक करोड़ में तैयार होता है। एक इंजन चार से आठ करोड़ में बनता है और एक बोगी ३० से ३५ लाख में तैयार होती है।

☺नार्दन रेलवे की लम्बाई सबसे अधिक है। नार्थ-ईस्टर्न फ्रंटियर रेलवे की लम्बाई सबसे कम है।

☺२६ जनवरी सन् १९५१ को चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स का विधिवत उद्घाटन किया गया था। इसमें रेल इंजनों का निर्माण किया जाता है।

मधुमक्खी

ये मधुमक्खियॉ बहुत निराली ,
हर फूलों पर मँडराती,
फूलों से रस ले लेकर,
अपना शहद बनाती।
ऊँचे-ऊँचे पेडों पर,
बनाती है अपना घर,
बहुत लाभदायक है छत्ता,
सबको ये भाता।
मधुमक्खियों की एक बडी मधुमक्खी,
जो रानी कहलाती है,
बहुत परिश्रम करती है,
हम सब को बहुत भाती है।

कविता गुप्ता, कक्षा-५

बवासीर की औषधि

१. कुकरौंध का एक किलों रस निचोड़कर इतना पकावें कि वह काफी गाढ़ा हो जाय तब उस की काली मिर्च के बराबर गोंली बनाकर सुबह शाम खायें। इससे बवासीर दूर हो जाएगी

२. मट्ठे (छाछ) में सेंधा नमक डालकर पीने से दस-पन्द्रह दिन में आराम हो जाता है।

३. मूली का रसस एक सौ पच्चीस ग्राम, जलेबी शुद्ध घी की सौ ग्राम। मूली के रस में जलेबी को एक घण्टे तक भीगनें दें, तत्पश्चात् जलेबी खाकर पानी को पी जाये।

एक सप्ताह के सेवन करने से बवासीर जीवन भर विदा हो जाएगा।

४. एक माशा कलमी शोरे को बारीक पीस लें प्रातः काल कुछ खाने से पहले फाँका कर तीन पाव बकरी का दूध पीं ले। मीठा करने के लिए मिश्री डाल सकते है। यह पुरानी बवासीर के लिए रामबाण है।

५. कलमी शोरे को बारीक पीसकर मस्सों पर तीन बार मलें। तीन दिन तक ऐसा करते रहने से पुरानी से पुरानी बवासीर ठीक हो जाती है।

पेट का वायु गोला

१. आजवायन, जीरा और नमक पीसकर फांके और नाक पर हींग का फाया लगाये। इससे शीघ्र आराम होता है।

२. सुबह के वक्त ६ माशे अरन्डी का तेल पीने से दस्त साफ होकर वायु गोला समाप्त होता है।

३. अजवायन, जीरा और नमक पीसकर फांके और नाक पर हींग का फाया लगायें। इससे शीघ्र आराम हो जाएगा।

४. बेर के बराबर गुड़ लेकर उसमें अल्प मात्रा में खाने का चूना रखकर गोली बनावे। इसके खाने से रोगी को अति शीघ्र लाभ होगा।

पेट के कीड़े साफ करने की औषधि

१. रेन्डी (अरन्डी) के पत्ते को मसलकर उसका अर्क निकाल लें और उसे गुदा द्वार पर लगावें। इससे कीड़े मर जायेंगें।

२. नीम का तेल गुदा द्वार पर लगावे यह भी आजमाई हुई दवा है।

३. नीम का दो चार मुलायम पत्तियाँ तीन चार दिन खाने से भी कीड़े मर जाते है।

सेहत के लिए जरुरी हैं 'दालें'

मसूर : मसूर में विटामिन ए,बी पाया जाता है। ये दो किस्मों मे होती है काली और लाल। इन दोनों में गुण एक ही समान है। यह शीतल, मधुर, मलावरोधक होती है। यह कफ, गुल्म, वात, पित्त रक्तपित और ज्वर नाशक है। वायु बढ़ाती है, कृमि उत्पन्न करती है, नेत्ररोग, यक्ष्मा और जिन्हें अर्श टपकते हैं,उनके लिए भी मसूर की दाल लाभदायक होती है और यह मूत्रकृच्छ, पथरी और हृदयरोग के लिए हितकारी होती है। मसूर को भिगोकर, पीसकर, शरीर पर उबटन लगाने से शरीर सुन्दर और कान्तिमय हो जाता है।

हरी मूंगः हरी मूंग में विटामिन ए,बी सी पााया जाता है। छिलके सहित मूंग शीघ्र पचने वाली होती है। यह मल को बांधने वाली कफ, और पित्त को शांत करने वाली, ज्वर नेत्ररोग और निर्बलता को दूर करने वाली होती है।

मोठ : मोठ को मोथी भी कहा जाता है, इसमें विटामीन बी पाया जाता है। यह मधुर, मल को बांधने वाला, कफ, पित्त, रक्तपित्त, वायुकारक, कृमिकारक, ज्वर, नेत्ररोग और यक्ष्मा का लाभ देने वाला होता है। इनका मठिया बनाया जाता है। मूंग अथवा मोठ की अंकुरित करके या इनको रात में भिगोकर, सुबह उबालकर नाश्ते में इसका उपयोग किया जाता है। मल के साथ खून गिरता हो तो इनको उबालकर प्याज के टुकड़ों के साथ मिलाकर खाने से तुरंत ठीक हो जाता है।

मालिशः रक्त संचार को सुचारु बनाती है।

डा० दीनानाथ झा

शुक्रवार को कड़वे शुद्ध सरसों के तेल से जननांगों व गुप्तांगो की मालिश करनी चाहिए तथा शनिवार को सरसों के तेल या घी से पैर की तथा पिंडलियों की मालिश करके इन अंगो को पुष्ट बनाया जा सकता है। यह शास्त्रोक्त विधि है। मालिश की शुरुआत किस तरह तथा शरीर के किस अंग से ही की जानी चाहिए, यह भी महत्वपूर्ण बात है। तेल या घी से भीगी हाथ उंगलियों से धीरे-धीरे रगड़ते हुए छाती से मालिश की शुरुआत होनी चाहिए। चूंकि यह हिस्सा शरीर के केन्द्रीय क्षेत्र में स्थित है, अतः इस भाग की मालिश अच्छी तरह होनी चाहिए। लोग साबुन का प्रयोग अंधाधुंध करते हैं, परंतु तेल लगाने को हेय दृष्टि से देखते है।

ध्यान देने योग्य बातें - मालिश का स्थान खुला व हवादार होना चाहिए। मालिश के तुरंत बाद एयर कंडीशनर या पंखे के नीचे नहीं जाना चाहिए और न ही स्नान करना चाहिए। मालिश के कम से कम एक घंटे बाद ही शरीर को अच्छी प्रकार मलकर स्नान करना चाहिए।

मालिश से आए पसीने के तुरत बाद स्नान करने से वजन में जादुई रुप से कमी आती है, परंतु ऐसा वहीं करे जिनका शरीर तुरंत होने वाले बदलाव को सहने की क्षमता रखता हो। मालिश करने के तुरंत बाद पानी पीना नहीं पीना चाहिए, परंतु मालिश के तुरत बाद पेशाब करने के शरीर के विकार पेशाब के रास्ते निकल जाते है।

आवश्यकता है

मासिक पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** हेतु

- संपादक
- संवाददाता
- विज्ञापन प्रतिनिधि
- विज्ञापन एजेंट

३० मई तक हमें लिखें।

बेशरम की लाठी

कुत्ता महासभा

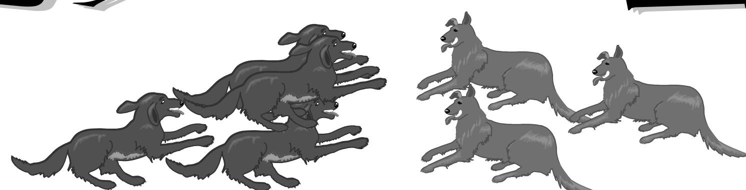

शहर के बीचों बीच, चौराहे पर
कुछ कुत्ते आपसी वार्तालाप कर रहे थे।
पालतू कुत्ते, फालतू कुत्तों को गले लगाकर,
मन का मलाल साफ कर रहे थे।
कुछ अतिविशिष्ट कुत्ते रह रह कर भौंक रहे थे,
आने जाने वाले आम आदमी का रास्ता रोक रहे थे।
मैंने उन्हें बेशर्मी की झलक दिखाया,
अभिवादन के असर से भीतर घुसने का मौका पाया।
भीतर का दिव्य नजारा था, मौसम अत्यन्त प्यारा था,
कुत्तों के साथ कई आरक्षित कुत्तियां चल रही थी
कहीं कहीं खतरे की निशानी लाल बत्तियां जल रही थी
मौके पर कुत्ता महासभा की मीटिंग चल रही थी,
असली माजरा देर तक समझ में आया,
जब कुत्तों ने ताली बजा कर एक गधे को माला पहनाया।
मैंने सोचा जानवरों में भी भाईचारा है, अजीब प्यार है,
अगले चुनाव में कुत्ता महासभा की ओर से
शायद यही गधा उम्मीदवार हैं ....

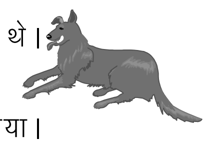

अशोक सिंह 'बेशरम'

आवश्यक सूचना

आंमत्रित है

लेखको से लेख, कहानियां, रोचक सस्मरण, आदि आमंत्रित है। अपनी रचनाओं के साथ में जवाबी लिफाफा लगाना न भूलें नहीं। नहीं तो प्रकाशित नहीं होने संदर्भ में रचनाओं को लौटाया नहीं जाएगा। रचनाओं को हासियां छोड़कर स्पष्ट शब्दों में लिखें।

आपका जबाब

आपका जबाब, कालम के अर्न्तगत आप अपने विचार हमें लिखना न भूलें। आपके विचार ही हमारी धरोधर व पूंजी है। आप न केवल पत्रिका की अच्छाईया बल्कि बुराईया भी लिखंकर भेंजे। हम आपके द्वारा पत्रों का बहुंत ही बेसब्री से इंतजार करते रहते है। आपके पत्र हमारा मार्गदर्शन करते हैं। आप हमें निम्न पते पर लिखें-

आपका जबाब
मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज'
२७७/४८६, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद-८

हमें खेद है

हम इस बार कुछ अपने स्थाई स्तम्भों को किन्हीं अपरिहार्य कारणोंवश नहीं दे पा रहे है। इनमें मुख्य रुप से कम्प्यूटर, ज्योतिषी, साहित्य आदि है। इन स्तम्भों को बंद नहीं किए बल्कि आगे आपकी सेवा में प्रकाशित करते रहेगें।

समय पर मासिक पत्रिका

"विश्व स्नेह समाज"

आपके दरवाजे पर। इस सुविधा का लाभ उठाइये और अपनी चहेती पत्रिका को घर बैठे पाइये। न खरीदने जाने की जरुरत न अंक खत्म होने का डर। बस नीचे दिये गए कूपन को भरकर हमें शुल्क सहित भेज दीजिए। आपको हमारे प्रतिनीधि द्वारा एक रसीद मिलेगी जिसको संभाल कर रखिए आपके सदस्य संख्या पर ड्रॉ निकाला जायेगा। जिसकी सूचना आपकों डाक द्वारा भेजी जाएगी। यह सीमा केवल १५ मई २००२ तक है। देर मत कीजिए

खुला ऑफर **खुला ऑफर** **खुला ऑफर**

पत्रिका के सदस्य बनिए और जीतिए हजारों रुपये के ईनाम

भारत में:मूल्य वार्षिक (साधारण डाक से) रु०५०/००
मूल्य वार्षिक : (रजि० डाक) रु० १००/००
विदेशों में (नेपाल व भूटान को छोड़कर) साधारण डाक से रु० १५०/००
आजीवन सदस्य : रु० ११००/००
भुगतान का माध्यम चेक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट। इलाहाबाद से बाहर चेकों के लिए रु० २०/०० अतिरिक्त राशि देय होगी।
कृपया चेक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर निम्न पते पर भेजें। **प्रधान संपादक**
मासिक पत्रिका **"विश्व स्नेह समाज"**
२७७/४८६, जेल रोड, चकरघुनाथ,
नैनी, इलाहाबाद-८
भेजने वाले का नाम :...
डाक का पता : ....

आपकी जुबान

कैरियर स्तम्भ बहुत अच्छा रहा

महोदय,

मार्च २००२ से जो आपने कैरियर स्तम्भ प्रारम्भ किया है। यह आपने बहुत ही अच्छा किया । आपने हम लोगों के दिल की बात जान ली और मान भी ली। इसके लिए आप बधाई के पात्र है।

प्रथम बार प्रकाशित कामचर्य डा० जीवन लाल गुप्त का बहुत पसंद आया ।

आशा की नही पूर्ण विश्वास भी है कि आप इस तरह के पठनीय लेख हम लोगों के लिए हर बार देते रहेगे।

अवधेश मौर्य, सिरसा, इला०, राजेश कुमार, नई दिल्ली

पत्रिका में कुछ प्रश्न का कॉलम भी रक्खे

प्रिय भाई गोकुलेश्वर कुमार जी,

आपके द्वारा प्रेषित विश्व स्नेह समाज पत्रिका का मार्च २००२ का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री स्तरीय और रोचक है। सबसे बडी बात तो यह है कि इसमें हर उम्र, हर वर्ग और हर कला क्षेत्र के पाठकों की रूचियों का ध्यान रखा गया है। छोटी सी पत्रिका में अधिक से अधिक सामग्री संग्रहित है। यह निश्चय ही समाज में एक नवीन वैचारिक क्रांति की दिशा में अग्रणी रहेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

लेकिन एक मेरा सुझाव यह है कि पत्रिका में कुछ प्रश्न भी दे दिया करें। जिससे एक नया उत्साह बना रहेगा। कौन बना विजेता

भवदीय

बी०पी०सक्सेना

प्रबंधक, रायल हाउस पब्लिक स्कूल, दारागंज, इलाहाबाद

आपका चुनावी सर्वेक्षण सबसे सटीक रहा

सेवा संपादक महोदय

आपकी पत्रिका के द्वारा कराये गये चुनावी सर्वेक्षण सबसे उत्तम और सटीक रहे। आगे के चुनावों में भी आप अपने सर्वेक्षण हमें देते रहे। जिसके जनता का विचार जानने का मौका मिलता है।

पत्रिका अन्य रचनाएं भी पठनीय और सारगर्भित हैं। मिठाई लाल, दिनेश सोनकर, कौशाम्बी

बधाई हो

आदरणीय जीजाजी एवं दीदीजी

शादी की छठवीं सालगिरह आप लोंगों को मुबारक हो

ये मेरी प्यारी-प्यारी जीजू और दीदी,
शादी की छठां साल आ गया
रोना-धोना बंद करो, इश्के इजहार का मुकाम आ गया।

सीमा मिश्रा, इलाहाबाद

स्वीडेन की राजकुमारी विक्टोरिया (बीच में) और मैडेलिन (दाएं से दूसरे) सबसे आगे हैं काउंटेस ऑफ वेसेक्स एक कार्यक्रम में जाते हुए

होली मुबारक हो

आदरणीय दीदीजी एवं जीजा जी

होली मुबारक हो

नमस्ते जीजा जी। यहां पर सभी खुश है। मैं मन लगाकर काम कर रहा हूँ। सुशीला को स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए कहिएगा। बिन्नी को हाईस्कूल निकालने के लिए कहिएगा।

आपका

संतोष (पप्पू), इलाहाबाद

होली मुबारक हो

आदरणीय दीदीजी एवं जीजाजी

होली मुबारक हो

मेरी ईश्वर से यही मनोकामना है कि आप लोग सदा खुश रहे। मैं कलकत्ता से भागकर आया था। इसके लिए मुझे माफ कर दे। अगर नाराजगी समाप्त हो गयी हो तो कलकत्ता घूमने आऊ। मेरा पता : २७७/४८६, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद।

आपका

संतोष, कुमार्र

इलाहाबाद

अर्जुन खा ही गये पटखनी सुष्मिता से

सुष्मिता सेन की छबि बॉलीवुड में एक बुद्धिमान अभिनेत्री की है। अपनी इसी छवि की एक झलक उन्होनें पिछले दिनों नवोदित हीरों अर्जुन रामपाल को दिखाई। सुनते हैं तब से अर्जुन सुष्मिता से हरदम बचने का प्रयास करते दिखाई देते है। यह तो सभी जानते है कि ये दोनों कलाकार फिल्म 'आंखे' में एक साथ अभिन कर रहे है। सो, इसी फिल्म के सेट पर यह 'तू-तू मैं-मैं' हुई। दरअसल फिल्म आंखे पहले अर्जुन भूमिका छोटी थी, जो बाद में बढ़ाई गई। सुनते है कि भूमिका बढ़ायें जाने के बाद से अर्जुन के तेवर भी बदल गए और वह खुद को तुर्रमखां के रुप में प्रस्तुत करने लगे। खबर है कि एक दिन उन्होंने सुष्मिता से भी अपने मुंह मियां मिट्ठू बनते हुए शेखी बघार दी कि अब लोग उनकी अहमियत समझ गए है। यहां तक तो बात ठीक थी, लेकिन जब अर्जुन रामपाल ने 'आंखे' के दूसरे कलाकारों पर हलका व्यंग्य किया तो मामला बिगड़ गया। उनका कहना था कि निर्माता निर्देशक ने उनकी भूमिका इसलिए बढ़ाई है, क्योंकि दूसरे चेहरे काफी पूराने है। अब बासी चेहरो से तो फिल्म चलेगी नहीं सो उनका रोल बढ़ाया गया। अर्जुन का व्यंग्य समझकर सुष्मिता से नहीं रहा गया। उन्होनें भी 'सौ सुनार की एक लोहार की' की तर्ज पर कह दिया कि पहले अपनी दोनों फिल्मों का रिकार्ड देखो, फिर आगे बोलो। अब अर्जुन क्या बोलते?

मलाइका का कैबरे डांस

बॉलीवुड में बनी छवि को तोड़ पाना मुश्किल काम होता है। इसी छवि की मारी मलाइका अरोड़ा है और वह चाहकर भी अभिनेत्री की इमेज नहीं बना पा रही है। फिल्म 'दिल से' के गीत 'छैया-छैया' से चर्चा में आई मलाइका 'मां तूझे सलाम' में सेक्सी डांस करने के बाद फिल्म 'कॉटे' में भी एक कैबरे डांसर बन कर आ रही है। जब लोग उनसे पूछते है कि क्या उन्हें फिल्मों में बतौर डांसर ही काम करना है? तो वह जबाब देती हचै, 'मैंने फिल्म 'बिच्छू' में एक जबरदस्त भूमिका निभाई थी, लोगों को वह याद करनी चाहिए। जहां तक 'कॉटे' की बात है तो मैं इस फिल्म में अकेली हीरोइन हूँ। मैं एक अच्छी अभिनेत्री हूँ, तभी तो सभी बड़े फिल्मकार मुझे अपनी फिल्मों में मौके दे रहे है। अब मलाइका अपनी कितनी तारिफ करें, लेकिन सच्चाई यही है कि वह जयश्री टी भी खूद को हीरोइन बताती थी, परंतु वह आखिरी फिल्म तक कैबरे डांस ही करती रही।

ब्रिटनी और ब्वॉय फ्रेंड

पॉप प्रिसेंज और रोलिंग स्टोन की कवर गर्ल ब्रिटनी स्पीयर्स कई मामलों में बिल्कुल दूसरी लड़कियों जैसी है। नारी-सुलभ लज्जा उनमें भी उसी तरह है जिस तरह अन्य युवतियों में। अपने ब्वॉयब्रेंड के समक्ष अभिनय करनें में वह लजाती है, सकुचाती है और घबड़ाती हैं। एमटीवी के अनुसार ब्रिटनी उस समय नर्वस महसूस कर रही थी, जब उनका ब्वॉयफ्रेंड जस्टिन टिंबरलेक उसके नये एलबम 'व्हाट इटस लाइक टु बी मी' में उन्हें रिकार्ड कर रह रहा था। एमटीवी के रिर्पोटर के मुताबिक ब्रिटनी ने खुद इस बात को माना कि जब वह जस्टिन मेरी आवाज को रिकार्ड कर रहा था तो मैं शुरु में तो बहुत नर्वस महसूस कर रही थी। सितम्बर के रोलिंग स्टोन पत्रिका के इश्यू में इस टीन ड्रीम ने स्वीकारा कि वह हर वक्त खुशवगार महसूस नहीं करती। मैं जब अनेक जगहों पर जाती हूँ तो कभी-कभी असुरक्षित भी महसूस करती हूं क्योंकि लोग किसी भी सेलिब्रिटी को एक खास तरह से देखने की ख्वाहिश रखते है।

सभी पाठकों को होली की शुभकामनाएं ☎ 698989, 699112

CYBER POINT

मधु प्रेस के बगल, मिर्जापुर रोड, नैनी, इलाहाबाद-८
कम्प्यूटर जॉब वर्क, थीसीस वर्क, प्रोजेक्ट वर्क
स्क्रीन प्रिटींग, विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, पम्पलेट, पोस्टर की डिजाइनिंग का एकमात्र और उत्कृष्ट संस्थान

प्रो० हरि प्रताप सिंह

सभी पाठकों को होली की शुभकामनाएं दुकान :405711

एहसान रिपेयरिंग सेन्टर

वी.सी.पी., वी.सी.आर, वी.सी.डी.
रिपेयरिंग का एक मात्र प्रतिष्ठान

सम्पर्क स्थल : लकी मार्केट, द्वितीय तल शाहगंज, (किंग इलेक्ट्रॉनिक्स के ऊपर) इलाहाबाद

होली की शुभकामनाएं डालना है।

कड़क फेमिली चाय डालना है।

432953:☎ सभी पाठकों को होली की शुभकामनाएं

M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

बच्चों के लिए समर कोर्स शीघ्र प्रारम्भ हो रहे है।

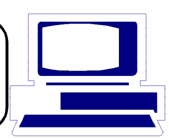

इग्नू द्वारा संचालित :
एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,
डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल, ए लेवल
माखन लाल चतुर्वेदी रा० प०विश्वविद्यालय द्वारा संचालित : पीजीडीसीए, डीसीए एवं **अन्य कोर्सेस** : टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,३डी होम, ओरेकल, इंटरनेट
कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क, विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस
सम्पर्क करेः कौशाम्बी रोड, धुस्सा,ग्राम प्रधान की मकान,इला०

सभी पाठकों को होली की शुभकामनाएं

दूरदर्शन इलेक्ट्रानिक्स

५३/३८, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद-२११०१६
हमारें यहॉ सभी प्रकार की टी.वी.,डेक, ऑडियों, वीडियों और इलेक्ट्रॉनिक्स
नोटः विज्ञापन बोर्ड नए बनते है तथा रिपेयरिंग होती है।

प्रो० हरिशंकर शर्मा

सभी पाठकों को होली की शुभकामनाएं

THE SCHOOL & HOME FOR THE BLIND

(Blind Asylum)

नैनी, इलाहाबाद-८, उ०प्र० फोन : ६६६३०१
नेत्रहीन विद्यालय में नेत्रहीन विद्यार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया है।
नोट : रहने व खाने की मुफ्त सुविधा
विद्वत अध्यापको द्वारा तकनिकी व व्यवहारिक ज्ञान देने की सुविधा

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

विगत छः वर्षो से आपकी सेवा में कार्यरत

एफ०सी०एल०सी

(फ्यूचर कम्प्यूटर लर्निग सेन्टर)

नितिन काम्पलेक्स, मेवा लाल की बगिया, नैनी, इलाहाबाद-८

- बच्चों के लिए समर कोर्स ४५ दिन का २० अप्रैल २००२ से प्रारम्भ।
- कम्प्यूटर क्या है जाने मात्र ४५ दिन के कम्प्यूटर कोर्स में
- जॉब वर्क
- प्रोजेक्ट वर्क
- थीसिस वर्क
- स्क्रीन प्रिटींग
- विजिटींग कार्ड
- शादी कार्ड
- पप्पलेट
- पोस्टर

की डिजाइनिंग एवं छपाई का एकमात्र और उत्कृष्ठ संस्थान

मेजिस्टक आटो लिमिटेड की पेशकश

हीरो पैन्थर

4S SUPER

नई खूबियों के साथ

- ४ स्ट्रोक इंजन, ४ गेयर,
- ऐवरेज ८०-८५ किमी० प्रति लीटर
- इंजन ७२ सी०सी० (आयातित)
- दाम केवल रु० १६,६००/-

बिक्री, सर्विसिंग एवं पार्ट्स के अधिकृत विक्रेता

अशोक आटो डिस्ट्रीब्यूटर्स

लीडर रोड, इलाहाबाद - फोन ☎: ४०१२७१

हमारा अगला अंक पर्यटन पर आधारित होगां। जिसमें आप गर्मियों की छुट्टियों को कहॉ व्यतीत करें, कैसे जाये, कहॉ रहे इत्यादि की जानकारिया रहेगी।

साथ ही बहुत निर्भिक थे शायर : **अकबर इलाहाबादी**, युवा उपान्यासकार गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी **'नैना'** का धारावाहिक उपन्यास **'दिल का पैगाम'**, ज्योतिष, कम्प्यूटर, कैरियर, महिलाओं के कानुनी अधिकार **'बच्चा गोद लेने सम्बन्धी कानून'** इत्यादि ढेर सारी रोचक व मजेदार स्तम्भ।जानने के लिए पढे। अपनी विज्ञापन अभी से बुक करवा ले। नहीं तो सुनहरा मौका हाथ से निकल जायेगा।

अगले अंक में पढ़ना न भूलिए, अपनी प्रति अभी से बुक करा ले।

विश्व स्नेह समाज

मासिक पत्रिका

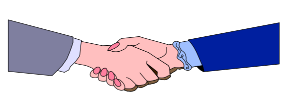

सम्पादकीय कार्यालयः
२७७/४८६, एफ०सी०एल०सी०कम्पाउन्ड
चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद-८

शाखा कार्यालयः
एम०टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर
कौशाम्बी रोड, धुस्सा, इलाहाबाद
☎४३२९५३